टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जून 2024 वर्ष 28, अंक 6 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2081 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल: tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

प्रभु से मांगना सीखिए

❑ अभिमन्यु खुल्लर

हम सब याचक हैं, मंगते हैं। मांगना, याचना करना हमारी आदिम मनोवृत्ति है। परमपिता परमात्मा से, परमशक्ति से मांगना मानव की आदिम प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से सिद्ध है। हम आपस में मांगते हैं पर परमात्मा से मांगने में हम सब एक हैं। वहां ऊँच-नीच, अमीर-गरीब का कोई भेद नहीं। सब अपने-अपने स्तर के अनुसार अपनी मनोकामना, याचना के रूप में प्रभु के समक्ष प्रस्तुत कर देते हैं। चूँकि प्रभु चैतन्य, अन्तर्यामी हैं, अत: सबकी याचनाएं, उनके द्वारा प्रस्तुत करने के पूर्व ही जान लेते हैं। सरल भाषा में कहिए सबकी प्रार्थनाएं सुन लेते हैं।

सृष्टि रचयिता, नियन्ता एवं सर्वशक्तिमान प्रभु की सत्ता समझने से पहले जरा मेरे साथ चलिए-विश्व की अथाह मित्तल के ज्ञात धनाढ्यों में बिल गेट्स, ब्रुनेई के सुलतान, लक्ष्मी मित्तल और भारत के अम्बानी बंधु, टाटा, बिडला। इनमें से कोई एक धनपति प्रात:कालीन सूर्योदय की स्वर्णिम प्रभा का आनन्द उठाने कन्याकुमारी के तट पर भ्रमण कर रहा है। शीतल मन्द समीर ने वातावरण को बहुत ही सुखद बना दिया है। इस वातावरण ने कुछ समय के लिए ही सही, उसकी चिन्ताओं का भार हलका कर दिया है। मन प्रफुल्ल है। इतने में ही एक भिखारी टकरा गया। बाबा, भीख दो? बाबा नाम से सम्बोधित धनिक ने पूछा, क्या चाहिए? उत्तर मिला-अठन्नी-चवन्नी का जमाना चला गया, एक रूपया लूंगा। बाबा ने कहा-कुछ और? भिखारी समझा कुछ देना नहीं चाहता इसलिए कुछ और कह रहा है। कहा-मैं एक रूपया मांगता हूँ, देना हो तो दे दो। लक्ष्मी मित्तल, बिल गेट्स सोचता है कि इस अज्ञानी को नहीं मालूम कि मैं कौन हूँ? क्या कुछ दे सकता हूँ? और यह एक रूपया ही मांग रहा है। यह तो आज की स्वर्णिम बेला में कुछ भी, लाख दो लाख मांगता तो भी मैं एक क्षण सोचे बिना इसे दे देता। बाबा ने एक रूपया दे दिया। मांगने वाला खुश, देने वाला नाखुश। प्रभु से मांगने में हम समस्त मानवों की यही स्थिति रहती है। हम सब अपनी-अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए प्रभु से याचना करते हैं और नहीं जानते कि वह क्या कुद दे चुका है अथवा दे सकता है।

प्रभु के समक्ष हम मानव क्या याचना करते हैं, जरा देखिए तो-कुम्हार याचना करेगा, सूरज तपता रहे। जितना ज्यादा तपेगा उतनी जल्दी उसके मिट्टी के बर्तन सूखेंगे। किसान प्रभु से मांगेगा कि घनघोर वर्षा हो, उसकी जोती-बोई फसल लहलहा जावे। मुकदमे के दोनों पक्षधर मांगेंगे कि उसकी विजय हो। हत्या, बलात्कार, जघन्य सामूहिक हत्याओं के जिम्मेदार निरंकुश तानाशाह भी अपनी जिन्दगी की भीख मांगते होंगे? आजकल के राजनेता बड़े जोश-खरोश से यज्ञ-याग, भजन-पूजन कर याचना करते हैं कि प्रभु उनकी पार्टी की जीत हो और उन्हें जनता का खून चूसने का मौका एक बार और मिले। सन्तानहीन महिला, लड़ाई होने पर पड़ोसन की नवागता पुत्रवधू को शाप देती हुई प्रभु से प्रार्थना करेगी कि यह निपूती मर जाये, इसके वंश का नाश हो जाये। विद्यार्थी अध्ययन न करने पर भी प्रथम श्रेणी में उत्तीण करने मांग रखते हैं। हिन्दू मंगतों की स्थिति बड़ी दयनीय है। वह यह भी नहीं देखते कि किस देवता से क्या मांगना चाहिए। यदि युवतियां हनुमान जी से प्रेम में सफलता या उत्तम वर पाने की मांग रखें तो हनुमान जी ऐसे संकट में पड़ेंगे कि संकटमोचन की उपाधि तत्काल उतारने को जी चाहेगा। यही स्थिति तब भी होगी जब कोई विवाहित महिला पुत्र मांग बैठे।

यही नहीं किसी एक देवता पर भी हिन्दू भक्त को विश्वास नहीं है। यदि हनुमान प्रसन्न नहीं होंगे तो राम जी, यदि राम जी भी नहीं तो सीता, राधा, कृष्ण, शिव-पार्वती कोई तो होगा, तैंतीस करोड़ हैं। यदि इनसे भी काम नहीं बना तो पीर साहब हैं, वह (हिन्दू भक्त) यह भी नहीं सोचता कि जिन पीर साहब से वह मांग रहा है, उनका शव तो खुद कब्र में पड़ा कयामत का इंतजार कर रहा है। बहुतायत हिन्दू मूर्तिपूजक तो हैं ही, शव पूजक भी सिद्ध हैं। गुरुद्वारे में भी तो अरदास लगाई जा सकती है। जालंधर के एक गुरुद्वारे में विदेश यात्रा के इच्छुक भक्तों को सौ रूपये से लेकर पांच सौ तक का वायुयान चढ़ावे में देने पर गुरुग्रन्थ साहिब अवश्य मनोकामना पूरी करेंगे-आश्वासन दिया जा रहा है। प्रेम-प्रसंगो की तो बात ही छोड़िए। ऐसी असंख्य मांगें प्रभु के सामने प्रस्तुत की जाती हैं।

ऐसी मांगों की पूर्ति करने के लिए भगवान को रिश्वत देने का

(शेष पृष्ठ 15 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

मित्रता मधुर और पवित्र बन्धन है

- पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी

प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, ट्रस्ट प्रधान महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा (जन्मभूमि)

मित्रता और दोस्ती शब्द दोनों ही परस्पर पर्यायवाची और समानार्थक हैं। दोस्ती शब्द व्याकरण में भाववाचक संज्ञा है। ऐसे ही दोस्त शब्द है तो संज्ञा है, परन्तु यह जातिवाचक संज्ञा है। यदि इस शब्द का संधिविच्छेद कर देवें तो शब्द यूं हो जायेगा-दो+सत् यानी दो सत्य अर्थात् दो सच्चाइयां। भाव है कि दो सच्चे व्यक्तियों का मधुर मिलन अर्थात् पवित्र बन्धन।

वैदिक मन्त्र के अर्थ अनुसार सब दिशाएं मेरी मित्र हो जायें। सब मित्र हो जाने पर व्यक्ति अज्ञात शत्रु हो जाता है अर्थात् व्यक्ति का कोई शत्रु नहीं होता। निःसन्देह आज के पदार्थवादी युग में उपरोक्त बात शत प्रतिशत गले से नहीं उतरती क्योंकि ऐसा व्यक्ति कोई लाखों में एक होगा जिसका शत्रु न हो। फिर भी दोस्ती दोस्ती ही होती है जो समान धाराओं के मिलन से पनपती है। दो व्यक्तियों के आचार-विचार, गुण-कर्म, स्वभाव के पवित्र बन्धन का नाम है दोस्ती अर्थात् दो सच्चे व्यक्तियों का परस्पर स्नेह। जहां विचारों में चिकनापन और व्यवहार में लचीलापन होगा, वहां दोस्ती मजबूत होगी। दोस्ती में स्नेह भाव दोनों तरफ ही होना चाहिए।

शत्रु दूर से नहीं आता, अपने पास ही आसपास अपनों में से ही पैदा होता है। यह तब पैदा होता है जब स्वार्थ अर्थात देने की बजाय केवल लेने की ललक मन में समायी होती है। दोस्ती कोई सौदा या व्यापार नहीं अपितु यह निश्छल, निरपराध, निष्कलंक व निरभिलाष होती है। कायर, कृतघ्न, दुश्चरित्र व्यक्ति कभी किसी का दोस्त नहीं हो सकता। वह सबका शत्रु बन जाता है। शत्रु को संस्कृत में अराति कहते हैं। अराति व्यक्ति वह होता है जो हमेशा लेता ही लेता है देता कभी कुछ भी नहीं। वह दूसरों के साथ बनावटी मित्रता करके ठगता है। दूसरे को अंधेरे में रखकर उसे धोखा देता है। वह हमेशा अपनी स्वार्थ सिद्धि करता है। धीर, गम्भीर, वीरपुरुष ही अपनी जान की बाजी लगाकर दोस्ती को निभाते हैं। कई लोग व्यर्थ में ही किसी को अपना शत्रु मानकर कुढ़ते व खीझते रहते हैं। शत्रुता का कोई विशेष कारण नहीं होता, बल्कि उनका अपना अशान्त मन और अनन्त स्वार्थ ही कारण होता है। वह मित्र नहीं जो समय आने पर सहायता न करे। मित्र वही है जो सुख और दुःख में समान रूप से साथ देवे और जो साथ ही तरे और साथ डूबे। दो व्यक्तियों में से यदि एक व्यक्ति दूसरे से चालाकी करे और कहे कि आप हमारे घर आएंगे तो लायेंगे क्या? तथा हम आपके घर आएंगे तो खिलाएंगे क्या? यह दोस्ती कदापि नहीं अपितु ठगी है, धोखा है, स्वार्थ सिद्धि है। नीतिकारों ने दोस्ती दो प्रकार की मानी है। प्रातः और सायंकाल की छाया के समान दुष्ट व सज्जन की दोस्ती भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। प्रातःकाल की छाया पहले बड़ी और सायंकाल में वही छाया घट जाती है अर्थात् छोटी हो जाती है। ऐसे ही दुष्टों की दोस्ती आरंभ में बड़ी होती है और बाद में निरन्तर छोटी होती जाती है और अन्ततः समाप्त हो जाती है। सायंकाल के समय छाया पहले छोटी परन्तु बाद में बढ़ती रहती है। ऐसे ही सज्जनों की मित्रता शुरु में धीरे-धीरे उत्पन्न होती है और बाद में निरन्तर बढ़ती जाती है।

जिस व्यक्ति का हृदय हमेशा प्रेम, स्नेह व दोस्ती के रंग में रंगा रहता है, उसे कोई शत्रु दिखाई ही नहीं देता। स्वार्थी आदमी को सावन के अन्धे की तरह सब शत्रु नजर आते हैं। दोस्ती और शत्रुता मानव के सहज स्वभाव हैं, परन्तु ज्ञानी और विवेकी पुरुष वह होता है जो सबको समान माने। अपने और पराये का भेद भुला देवे। नीति-कारों के अनुसार मित्र वह जो मित्र को पाप से हटाए, मित्र के भेद को सुरक्षा प्रदान करे, उसके गुणों का सम्मान करे और उसे हितकर कार्यों में व्यस्त रहने का परामर्श देवे। सच्चा मित्र विपत्ति में मित्र को छोड़ता नहीं तथा जरूरत होने पर उसे धन आदि सब कुछ देने को तत्पर रहे। कृष्ण और सुदामा की दोस्ती इस मापदण्ड का खरा उदाहरण है। दोस्ती किसी जाति, बिरादरी, ऊंच-नीच, गरीब-अमीर, मजहब या सुन्दर-असुन्दर की मोहताज नहीं होती। दोस्ती वह है जो आशा और निराशा के ग्रहण से बची रहे। दोस्ती वह जो विश्वास की पटड़ी पर टिकी रहे। यदि दोस्ती का उपरोक्त मापदंड सुदृढ़ है तो दोस्ती की लता फलने-फूलने लगेगी। हां, एक बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि दोस्ती रूपी लता को बचाये रखने के लिए क्रोध की तलवार को हमेशा हमेशा के लिए विवेक और शान्त स्वभाव के म्यान में बंद रखनी पड़ेगी क्योंकि दोस्ती इम्तिहान लेती है जो कि एक महान् त्याग का विषय है।

– पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी जी के साथ अनऔचपारिक बैठक में चर्चा के कुछ अंश

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर हरियाणा में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर 2024 इस बार हरियाणा में दिनांक 8 जून से 16 जून 2024 तक राजकीय कन्या विद्यालय, ग्राम पोस्ट गांधारा, तहसील सांपला, जिला रोहतक (हरियाणा) मोबाईल नं. 91-8700541461) में आयोजित किया जा रहा है। इसमें भाग लेने के लिए 13 वर्ष से अधिक आयु की आर्य वीरांगनाएं दिनांक 01 जून 2024 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर देवें ताकि व्यवस्था सुचारू रूप से हो सके।

साधवी डॉ. उत्तमा यति, प्रधान संचालिका (मो.8750482498), **मृदुला चौहान,** संचालिका (मो. 9810702760)
आरती खुराना सचिव (मो. 9910234595), **नीरज कुमारी,** कोषाध्यक्ष (मो. 8920208536)

युवा, संस्कार और हम

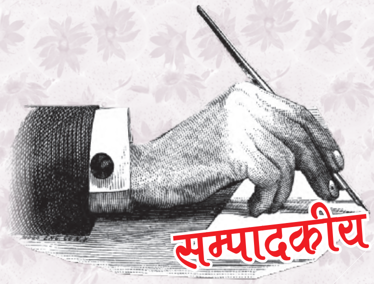

वार्षिक परीक्षायें पूर्ण हो चुकी हैं और लगभग छोटी कक्षाओं के परिणाम भी आ चुके हैं। युवाओं में नई कक्षाओं में जाने की खुशी और नये उत्साह का समावेश वर्ष के इस भाग में देखने को अधिक मिलता है। युवा मानसिक तनाव से मुक्त होते हैं। वार्षिक परीक्षायें होती नहीं और ग्रीष्मकालीन अवकाश आने वाला होता है। ऐसा उत्साह और तनाव रहित होना स्वभाविक ही है। बड़े, वृद्ध सभी ने अपनी इस आयु में इस अवस्था का आनन्द अवश्य ही महसूस किया होगा। हम यहां बता दें कि इस मस्ती, खुशी के बीच कुछ अन्य पहलू भी उभरने लगते हैं। यह सभी को ज्ञान है कि समय के साथ किशोरों, यहां तक कि नन्हें बच्चों की भी मानसिक आयु बढ़ी है। पश्चिमी संस्कृति ने हमारे मन मस्तिष्क को पूरी तरह से प्रभावित किया है। एक समय था जब युवा वर्ग भी सिनेमा देखने के लिए बड़ों से अनुमति लेकर जाया करता था। आज जाने की सूचना दे दे वही बड़ी बात है। इस पृष्ठभूमि में क्योंकि बात हमारी युवा पीढ़ी की है। अत: इसी को केन्द्रित कर हम चर्चा करेंगे।

हमारे सामने सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हम 'संस्कारों' की अवहेलना कर रहे हैं जो हमारी वैदिक संस्कृति का आधार है, संस्कार युवा वर्ग को व्यवस्थित करने, शारीरिक, मानसिक एवं बुद्धि के स्वस्थ विकास के साथ-साथ जीवन में सद्‌गुणों की प्रतिष्ठा एवं अन्त:करण की शुद्धि की प्राप्ति के लिए स्थापित किये गये हैं। एक वाक्य में कहें तो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु संस्कारों की परिकल्पना की गई। हमारे पूर्वजों ने अति दूरदर्शिता दिखाते हुए व्यक्ति के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की व्यवस्था दी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने तो संस्कार रहित जीवन को ही निरर्थक माना है। उनके अनुसार दोषों का नाश तथा गुणों की स्थापना ही संस्कारित होना है। इसीलिए स्वामी जी ने 16 संस्कारों का प्रावधान दिया है जो गर्भ से लेकर देह त्याग तक जीवन भर साथ चलते हैं। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि यह संस्कार मात्र एक पूजा पद्धति 'रिचुअल' नहीं बल्कि आत्मनिर्माण के सशक्त माध्यम है। आज शिक्षा प्रणाली सम्बन्धी समस्यायें, पढ़ाई का बोझ, इससे उत्पन्न तनाव, तनावों के कारण विद्यार्थियों की आत्महत्यायें, अनुशासनहीनता, विश्वविद्यालयों की हड़तालों, बढ़ती गुण्डागर्दी, शिक्षा क्षेत्र में फैलती राजनीति आदि तमाम समस्याओं की सुरसा राक्षसी की तरह लम्बी सूची बन सकती है। प्रणाली का पुन: विश्लेषण जरूरी है और इसी विश्लेषण का प्रथम चरण है 'उपनयन संस्कार'।

इस संस्कार का अर्थ है कि बालक को अध्ययन हेतु आचार्य के पास ले जाना। इस संस्कार में यज्ञोपवीत धारण कराया जाता है। आचार्य से दीक्षा लेकर शिक्षा का अधिकारी बनाता है। पूर्वकाल में यज्ञोपवीत के अतिरिक्त मृगचर्म, कटि मुन्जमेखला (घास की एक प्रकार की बेल) दण्ड, पात्र (कटोरा) इन सभी वस्तुओं का भाव है कि ऐसा करते हुए मन को नियन्त्रित रखते हुए, श्रेष्ठ विद्याओं को प्राप्त करना।

आज के संदर्भ में उपरोक्त संस्कार करना अति आवश्यक है। परन्तु गुरुकुलीय शिक्षा का अधिक प्रसार न होने के कारण युवा वर्ग शहरी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इस कारण दण्ड, पात्र, मृगचर्म इत्यादि का होना सम्भव नहीं है। लेकिन यज्ञोपवीत सम्भव है और उसके तीन धागों के महत्व को युवा से प्रण लेकर याद रखने को कहा जा सकता है।

क्या घृणा को अधिक घृणा से समाप्त किया जा सकता है। क्या आतंक को आतंक से समाप्त किया जा सकता है। यदि नहीं तब विकल्प क्या है। केवल बाल्यकाल युवास्था में दिए गए संस्कार, कच्ची आयु में ही मानवता के समता के बीज रोपें जायें। ऐसा नहीं लगता कि समय आ गया है कि हम अपनी संस्कृति के मूल्यों पर गम्भीरता से विचार करें। आने वाले दिनों में ग्रीष्मकालीन अवकाश में आपके आसपास युवकों के लिए अवश्य ही कोई शिविर आर्य समाज के माध्यम से आयोजित किया जा रहा होगा। इसका सदुपयोग कर अपने बच्चों को इन शिविरों में भेजें। आज के परिवेश में केवल आर्यसमाज ही युवाओं को वैदिक मान्यताओं से संस्कारित करने में सक्षम है। आर्यसमाज की युवा शाखा आर्य वीर दल के माध्यम से पूरे विश्व में सक्रिय है। विशेषकर ग्रीष्मकालीन अवकाश में ऐसे विशेष आयोजन किये जाते हैं। युवाओं को संस्कारित करने के लिए आर्य वीर दल की शाखायें, आपके निकटवर्ती क्षेत्रों में अवश्य होंगी। उनसे सम्पर्क बनायें। उनके द्वारा लगाये जा रहे शिविरों का सदुपयोग करें और अपने युवाओं, बच्चों को संस्कारित करें।

अजय टंकारावाला

एक प्रेरणा परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 110 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज की आवश्यकता है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी। **एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 20,000/- रुपये है।** आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

निवेदक:- योगेश मुंजाल (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

टंकारा ट्रस्ट द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों के लिए आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के
एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय 20,000/- रुपये देवें

❑❑❑

गौ-दान : महा-दान–उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों की पर्याप्त मात्रा में दूध की व्यवस्था हेतु एक गऊदान करें अथवा 75,000/- रुपये की सहयोग राशि गऊ हेतु देवें।
(तीन व्यक्ति मिलकर भी 25,000/- प्रति व्यक्ति भी दे सकते है।)

❑❑❑

गऊ पालन एवं पोषण हेतु 12,000/- रुपये का हरा चारा एवं
पौष्टिक आहार की व्यवस्था (एक गऊ का वार्षिक व्यय)

❑❑❑

1000/- रुपये की सहयोग राशि देकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जन्मभूमि के सहयोगी सदस्य बनें। यह राशि आपको प्रतिवर्ष देनी होगी। इसलिए अपना पूरा पता अवश्य लिखवायें।
जो दान देवें उसके अतिरिक्त यह 1000/- रूपये राशि अवश्य देवें।

❑❑❑

श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई-कढ़ाई केन्द्र की बेटियों द्वारा बनाए गए
सामान को क्रय करके सहयोग कर सकते हैं।

❑❑❑

ब्रह्मचारियों के एक सत्र का भोजन 20,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर।

❑❑❑

ऋषि बोधोत्सव पर 1,50,000/- रुपये की सहयोग राशि देकर एक सत्र के भोजन में सहयोग

❑❑❑

20,000/- रुपये की सहयोग राशि प्रति वर्ष किसी एक दिन का (जन्मदिवस अथवा
स्मृति दिवस) ब्रह्मचारियों का भोजन देकर सहयोग कर सकते है।

❑❑❑

ब्रह्मचारियों के पहनने हेतु सफेद कपड़ा एवं दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुएं देकर

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर की धारा 80 G के अन्तर्गत मान्य है।
एवम् C.S.R. दान प्राप्त करने हेतु पंजीकृत।

यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

–:निवेदक:–

योगेश मुंजाल
कार्यकारी प्रधान

अजय सहगल
मन्त्री (मो. 9810035658)

उपकार्यालय: आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 सम्पर्क: 09560688950 (व्यवस्थापक)

ओ३म् की ध्वनि में छिपी है चमत्कारी शक्ति

❑ गंगाशरण आर्य

ओ३म् की ध्वनि का सभी मत सम्प्रदायों में महत्व है। हमारे सभी वेदमंत्रों का उच्चारण भी ओ३म् से ही प्रारम्भ होता है जो ईश्वरीय शक्ति की पहचान है। परमात्मा का निज नाम ओ३म् है। अंग्रेजी में भी ईश्वर के लिए Omnipresent सर्वव्यापक शब्द का प्रयोग होता है यही सृष्टि का आधार है। वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि हमारे अंतरिक्ष में पृथ्वी मण्डल, यह सिर्फ आस्था नहीं, इसका वैज्ञानिक आधार भी है। खगोल मण्डल, सभी ग्रहमण्डल तथा अनेक आकाशगंगाएं लगातार ब्रह्माण्ड का चक्कर लगा रही हैं। ये सभी आकाशीय पिण्ड कई हजार मील प्रति सैकेण्ड की गति से अनन्त की ओर भागे जा रहे हैं, जिससे लगातार एक कम्पन्न, एक ध्वनि अथवा शोर उत्पन्न हो रहा है इसी को अथवा इसी ध्वनि को हमारे ऋषि महर्षियों ने अपनी ध्यानावस्था में सुना। इसे ब्रह्मनाद कहा यानी अंतरिक्ष में होने वाला मधुर गीत 'ओ३म्' ही अनादिकाल से अनन्त काल तक ब्रह्माण्ड में व्याप्त है। ओ३म् की ध्वनि या नाद ब्रह्माण्ड में प्राकृतिक ऊर्जा के रूप में फैला हुआ है जब हम अपने मुख से एक ही सांस में ओ३म् का उच्चारण मस्तिष्क ध्वनि अनुनाद तकनीक से किया जाये तो मानव शरीर को अनेक लाभ होते हैं और वह असीम सुख, शान्ति व आनन्द की अनुभूति करता है।

ओ३म् शब्द तीन अक्षरों एवं दो मात्राओं से मिलकर बना है जो वर्णमाला (क ख ग...) के समस्त अक्षरों में व्याप्त है। पहला शब्द है 'अ' जो कंठ से निकलता है। दूसरा है 'उ' जो हृदय को प्रभावित करता है। तीसरा शब्द 'म्' है जो नाभि में कम्पन्न करता है। इस सर्वव्यापक पवित्र ध्वनि के गुंजन का हमारे शरीर की नस-नाड़ियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है विशेषकर मस्तिष्क मण्डल, हृदय व नाभि केन्द्र में कम्पन्न होने से उनमें से जहरीली वायु तथा व्याप्त अवरोध दूर हो जाते हैं जिससे हमारी समस्त नाड़ियां शुद्ध हो जाती हैं। जिससे हमारा आभामण्डल शुद्ध हो जाता है और हमारे अन्दर छिपी हुई सूक्ष्म शक्तियां जागृत होती व आत्म अनुभूति होती है।

किसी भी ध्वनि का प्रभाव तभी उत्पन्न होता है जब उसे विशेष लयबद्धता व श्रद्धा के साथ व्यक्त किया जाये। 'ओ३म्' ध्वनि करते हुए स्वर की मधुरता तथा उच्चारण की शुद्धता पर अवश्य ध्यान देना चाहिए। जब भी 'ओ३म्' शब्द का उच्चारण करे तब सब ओर से वृत्तियों को हटाकर एकाग्रचित होकर के उस प्रभु का प्रेम, श्रद्धा और दृढ़ विश्वास से ध्यान करे। ऐसी भावना बनाये कि वही हमारा सच्चा पिता, माता, भाई, बन्धु हमारा सर्वस्व, हमारे जीवन का आधार है (जिसका निज और मुख्य नाम ओ३म् है) वह जो कुछ करता है, अच्छा ही करता है। हमारा सदैव भला ही करता है, दु:ख द्वारा भी हमारे पाप कर्मो का शमन करता है व हमें पाप के बोझ से हल्का करता है। इसलिए दु:ख आने पर भी उसका ही धन्यवाद करें। क्योंकि सृष्टिकर्ता के अनेक नामों में ओ३म् का सर्वोत्तम महत्त्व है। इसी महत्ता को देखते हुए व अनुभव करते हुए ऋषियों ने चारों वेदों के 20389 मन्त्रें में प्रत्येक को ओ३म् से प्रारम्भ किया। इसी आधार पर ओ३म् क्रतो स्मर का आदेश यजुर्वेद के 40वें अध्याय के 15वें मन्त्र में दिया गया है।

ओ३म् के संबंध में यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या ओ३म् शब्द की महिमा का कोई वैज्ञानिक आधार है? क्या इसके उच्चारण से इस असार संसार में भी कुछ लाभ है? इस संबंध में ब्रिटेन के एक साईंटिस्ट जर्नल ने शोध परिणाम बताये हैं जो यहां प्रस्तुत हैं रिसर्च एंड इंस्टीटड्यूट ऑफ न्यूरो साइंस के प्रमुख प्रोफेसर जे. मार्गन और उनके सहयोगियों ने सात वर्ष तक 'ओ३म्' के प्रभावों का अध्ययन किया। इस दौरान उन्होंनें मस्तिष्क और हृदय की विभिन्न बीमारियों से पीड़ित 2500 पुरुषों और 2000 महिलाओं का परीक्षण किया। इन सारे मरीजों को केवल वे ही दवाइयां दी गईं जो उनका जीवन बचाने के लिए आवश्यक थीं। शेष सब बंद कर दी गई। सुबह 6 से 7 बजे तक यानी कि एक घंटा इन लोगों को साफ, स्वच्छ, खुले वातावरण में योग्य शिक्षकों द्वारा ओ३म् का जप कराया गया। इन दिनों उन्हें विभिन्न ध्वनियों और आवृत्तियों में ओ३म् का जप कराया गया। हर तीन माह में हृदय, मस्तिष्क के अलावा पूरे शरीर का 'स्कैन' कराया गया। चार साल तक ऐसा करने के बाद जो रिपोर्ट सामने आई वह आश्चर्यजनक थी। 70 प्रतिशत पुरुष और 82 प्रतिशत महिलाओं से 'ओ३म्' का जप शुरू करने के पहले बीमारियों की जो स्थिति थी उसमें 90 प्रतिशत कमी दर्ज

(शेष पृष्ठ 7 पर)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके। **वर्तमान में अच्छी गाय 75000/- रूपये के लगभग प्राप्त हो रही है।**

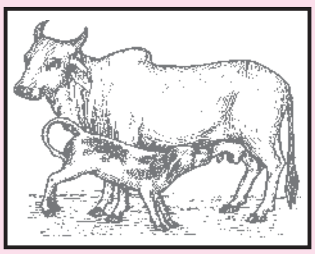

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **25,000/-** रुपये गाय की खरीद हेतु सहयोग राशि भेज रहे है। 3 सहयोगी प्राप्त होते ही गाय खरीदी जाती है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गर्म वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदकः- **योगेश मुंजाल** (कार्यकारी प्रधान) **अजय सहगल** (मन्त्री)

प्रवेश सूचना

आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान, मो. 9672223865, 9416078595

साबी नदी के किनारे स्वस्थ जलवायु युक्त **आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया** में छठी कक्षा से प्रवेश प्रारम्भ है तथा प्रथमा से आचार्य तक गुरुकुल पद्धति से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से संबंधित पाठ्यक्रम नि:शुल्क पढ़ाया जाता है। गुरुकुल में योग्य प्राचार्य तथा अनुभवी प्राध्यापिकायें अध्यापन कार्य में रत है। सुन्दर छात्रावास, गौशाला, यज्ञशाला पुस्तकालय, व्यायामशाला के प्रबन्ध के साथ आर्ष पद्धति पर आधारित इस गुरुकुल में आचार-व्यवहार, स्वास्थ्य, चरित्र निर्माण, देशभक्ति तथा धार्मिक शिक्षा योगाभ्यास आदि द्वारा कन्याओं का स्वर्णिम विकास करवाया जाता है, प्रवेश प्रारम्भ है।

सम्पर्क करें-प्राचार्य, आर्ष कन्या गुरुकुल, दाधिया, अलवर, राजस्थान-301401

ऋषि दयानन्द जी की पवित्र जन्मभूमि टंकारा में

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा द्वारा संचालित

श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

एवम् महात्मा सत्यानन्द मुंजाल गुरुकुल (आर्य पद्धति कक्षा 7 से 10वीं तक)

प्रवेश प्रारंभ

कक्षा-6 (प्रथमा प्रथम खण्ड)

कक्षा-7 (प्रथमा द्वितीय खण्ड)

कक्षा-8 (प्रथमा तृतीय खण्ड)

कक्षा-9 (पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष)

कक्षा-11 (उत्तर मध्यमा प्रथम वर्ष)

कक्षा-उपदेशक (10वीं कक्षा उत्तीर्ण होने के बाद)

प्रवेश हेतु आवेदन करें: 15 जून 2024 से 10 जुलाई 2024

गुरुकुल में क्यों पढ़े?- ❑ ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जानने के लिए, ❑ सन्तानों को सुशिक्षित करने के लिए, ❑ अन्धविश्वास और पाखण्डों को चुनौति देने के लिए, वैदिक धर्म की पुन: स्थापना के लिए, ❑ गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की स्थापना के लिए, ❑ आश्रम व्यवस्था को जानने के लिए, राजधर्म को जानने के लिए, ईश्वर, जीव और प्रकृति के भेद को समझने के लिए, जगत् की उत्पति, स्थिति और प्रलय को समझने के लिए, ❑ बन्धन और मोक्ष विषय को जानने के लिए, ❑ धर्म के सत्य स्वरूप को जानने के लिए, ❑भारत वर्ष में फैले मत-मतान्तरों में सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए, ❑भारतीय संस्कृति को समझने के लिए, ❑ युवकों में बढ़ती हुई नास्तिकता को रोकने के लिए, ❑ धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति के लिए, ❑ विश्व में मानव धर्म को विस्तृत करने के लिए, ❑ वैचारिक क्रान्ति के लिए।

सुविधाएँ- ❑ आवास व्यवस्था, ❑ उच्च गुणवतायुक्त भोजन (पौष्टिक), ❑ नि:शुल्क शिक्षा, ❑ गुणवतायुक्त शिक्षा, ❑ स्वच्छ वातावरण, ❑ खेल-कूद का मैदान, ❑ नि:शुल्क प्राथमिक उपचार, ❑ प्रत्येक बच्चे का मानसिक, शारिरीक नैतिक व भावात्मक विकास।

आचार्य रामदेव शास्त्री, श्री महर्षि दयानन्द अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय

डाक टंकारा, जिला मोरबी (सौराष्ट्र गुजरात) 363650, मो. 09913251448

ईश्वर ने हम जीवात्माओं को मनुष्य क्यों बनाया

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

हम मनुष्य कहलाते हैं। हम वस्तुतः सदाचार को धारण कर मनुष्य बन सकते हैं परन्तु सदाचारी व धर्मात्मा मनुष्य बनने के लिये सदाचरण रूपी पुरुषार्थ करना होता है। पुरुषार्थ सहित विद्यार्जन कर विद्या के अनुकूल आचरण करना होता है। क्या हम सब विद्यावान हैं? इसका उत्तर 'न' अक्षर में मिलता है। जब हम विद्यावान ही नहीं बने तो हम विद्या के अनुकूल व अनुरूप कर्म कैसे कर सकते हैं? आश्चर्य तो इस बात का है कि संसार की वर्तमान जनसंख्या 7 अरब से अधिक है और इसके 99 प्रतिशत से अधिक लोगों को यह पता नहीं है कि उन्हें विद्या का अर्जन करना है और विद्यानुसार कर्म करते हुए अपने दुःखों के बन्धनों को काटना है। दुःखों से मुक्त होना तथा सुख एवं आनन्द की अवस्था को प्राप्त करना ही जीवात्मा जो चेतन, अल्पज्ञ, एकदेशी, अनादि, नित्य, अजर, अमर व अविनाशी है, उसका मुख्य कर्तव्य है। मनुष्य के दुःखों की निवृत्ति ज्ञान एवं आचरण दोनों को करने से होती है। अतः बुद्धियुक्त प्राणी कहे जाने वाले आकृति मात्र से मनुष्यरूपी प्राणी को ज्ञान की खोज में प्रयत्न करना चाहिये और इस सृष्टि के बनाने वाली सत्ता का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर उसके साक्षात्कार में प्रवृत्त होना चाहिये। वर्तमान समय में ज्ञान की प्राप्ति पुस्तकों व विद्वानों से होती है। इसको जानकर व आचारण में लाकर मनुष्य बन्धनों से मुक्त होकर जन्म-मरण से छूटता है और सुदीर्घकाल 31 नील 10 खरब 40 अरब से अधिक वर्षों तक ईश्वर के सान्निध्य में रहकर सुखों व आनन्द का भोग करता है।

ईश्वर ने हमारी जीवात्मा को मनुष्य का शरीर दिया है। सभी जीवात्माओं को मनुष्यों के शरीर नहीं मिले हैं। मनुष्येतर अनेक योनियां हैं। जिन जीवात्माओं को मनुष्यों के शरीर नहीं मिले उन्हें पशु व पक्षियों आदि के अनेकानेक शरीर प्राप्त हुए हैं। इसका कारण व आधार क्या है? इसके लिये हमें यह जानना है कि हमें व सभी जीवात्माओं को जन्म ईश्वर के कर्म-फल सिद्धान्त व विधान के अनुसार मिलता है। कर्म-फल सिद्धान्त में मनुष्य शुभ व अशुभ कर्म जिन्हें पुण्य व पाप कर्म कहते हैं, उन्हें मनुष्य योनि का प्राणी करता है। मृत्यु के समय जिस मनुष्य आत्मा के पुण्य कर्म आधे से अधिक होते हैं उन्हें मनुष्य शरीर मिलता है और जिनके आधे से अधिक कर्म पाप कर्म होते हैं उन्हें अन्य पशु, पक्षी आदि योनियां मिलती हैं जहां मनुष्यों को अपने पाप कर्मो का फल भोगना पड़ता है। इसे अधिक सूक्ष्म रूप में जानने के लिये दर्शन ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिये। दर्शन ग्रन्थों में अनेक विषयों सहित जीवात्मा के जन्म का विश्लेषण भी किया गया है जिससे जन्म के साथ कर्म का सम्बन्ध होना सिद्ध होता है। इस अध्ययन से ईश्वर का विधान भी समझ में आ जाता है। जिन जीवात्माओं को बुद्धि से युक्त मनुष्य का शरीर मिला होता है, उनसे परमात्मा की अपेक्षा होती है कि वह सद्कर्मों को करें। कोई भी व्यक्ति दुष्कर्म न करें। इसके लिये मार्गदर्शन हमें शास्त्रों के अध्ययन वा ज्ञान से प्राप्त होता है। शुद्ध शास्त्र ज्ञान ही विद्या कहलाता है। शास्त्र ज्ञान को प्राप्त मनुष्य ही यथार्थ रूप में मनुष्य होता है। ज्ञान व अज्ञान से युक्त मनुष्य, मनुष्य की आकृति होने पर भी, आर्य, देव, विद्वान, अनार्य, अनाड़ी, असुर, राक्षस, अधम आदि अनेक श्रेणी के मनुष्य होते हैं। इन सबका आधार मनुष्य के इस जन्म के कर्म होते हैं। देव विद्वानों को कहते हैं। विद्वान धर्म एवं कर्म के स्वरूप को जानता है। उसे शुभ, अशुभ, पाप-पुण्य वा सद्-असद् व्यवहार का भेद पता होता है। इन्हीं को आर्य भी कहा जाता है। इतर मनुष्य, मनुष्य रूप में, अनार्य, अनाड़ी, अज्ञानी, असुर आदि ही होते हैं।

हम यह जानना चाहते हैं कि परमात्मा ने हमें मनुष्य क्यों बनाया और जो अन्य योनियों के प्राणी हैं उन्हें मनुष्यों का शरीर क्यों नहीं दिया? इसका सत्य ज्ञान से युक्त वैदिक ग्रन्थों में जो उत्तर मिलता है वह यह है कि परमात्मा ने जीवात्मा के पूर्वजन्म के प्रारब्ध व उन कर्मों के आधार पर हमें मनुष्य जन्म दिया है जिनका भोग शेष है अथवा हमें भोग करना है। मनुष्य का जन्म पुण्य व पाप दोनों प्रकार के कर्मों का भोग करने तथा नये कर्म करने के लिये होता है। मनुष्य अपने आधे से अधिक पुण्य कर्मों के कारण मनुष्य जन्म का अधिकारी बनता है और पुण्य-पाप कर्मों के अनुसार उसे अपना पारिवारिक व सामाजिक परिवेश मिलता है। हमारे कर्म जितने अधिक पुण्यकारी होंगे उतना ही अधिक अच्छा व अनुकूल परिवेश जीवात्मा को प्राप्त होता है। पाप कर्मों के कारण हो सकता है कि हम किसी निर्धन व रोग ग्रस्त परिवार में जन्म लें। वहां हमें भी उन पापों के कारणों से रोग प्राप्त हों तथा हमारे जीवन की परिस्थितियां अत्यन्त जटिल व संघर्षमय हों। जब हम किसी बहुत सुखी व निश्चिन्त मनुष्य को देखते हैं तो हमारे मुख से अनायास यह निकलता है कि यह पिछले जन्म में मोती दान करके आया है। दान भी एक पुण्य कर्म होता है। हम सत्य बोलते हैं जिससे दूसरों का हित होता है तो वह भी सद्कर्म व पुण्य कर्म होता है। हम सन्ध्या व यज्ञ करते हैं तो यह भी श्रेष्ठ व पुण्यकारी कर्म होते हैं जिनका लाभ हमें इसी जीवन में और जो बच जाते हैं उनका लाभ व सुख परजन्म में प्राप्त होता है। हम देखते हैं कि बहुत सी जीवात्मायें पशु, पक्षी आदि अनेक निम्न योनियों में जन्म प्राप्त करती हैं। इसके कारणों पर विचार करते हैं तो यही ज्ञात होता है कि ऐसी जीवात्माओं के आधे से अधिक कर्म पुण्य न होकर पाप थे। संसार में अनेक मत प्रचलित हैं। अनेक मतों व उनके आचार्यो को ईश्वर के कर्म-फल सिद्धान्त का ज्ञान नहीं था। उनकी बुद्धि इतनी तीव्र व बलवान तथा ज्ञान से युक्त नहीं थी कि वह जान पाते कि मनुष्य व अन्य प्राणियों का उन उन योनियों में जन्म किन कारणों से होता है? वह आचार्य वेद, दर्शन और उपनिषदों के ज्ञान से भी वंचित थे। हमारे दर्शन ग्रन्थों में धर्म व कर्म सिद्धान्त की विवेचना व समीक्षा की गई है और यही इससे निष्कर्ष सामने आया है कि जिस जीवात्मा का जन्म मनुष्य से इतर अन्य प्राणी योनियों में हुआ है, उनके पूर्वजन्म में आधे से अधिक कर्म पाप कर्म थे। उन्होंने पुण्य कम परन्तु पाप कर्म अधिक किये थे।

हमें यह भी जानना चाहिये कि ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी रूप से सब जीवात्माओं सहित मनुष्यों के सभी कर्मों का साक्षी होता है। किसी प्राणी का कोई कर्म ईश्वर से छुपता नहीं है। ईश्वर को किसी जीव के किसी कर्म की विस्मृति भी नहीं होती। अतः वह जीव के शुभाशुभ कर्मों तथा अपनी सर्वज्ञता एवं सर्वशक्तिमत्ता के गुण से सभी जीवों को उनके सभी पाप व पुण्य कर्मों का फल देता है। किसी जीवात्मा का कोई कर्म कदापि क्षमा नहीं होता। कुछ मतों में यह

सिद्धान्त वा विचार पाये जाते हैं कि उन मतों व उनके आचार्यों की बातों पर बिना विचारे विश्वास करने व उन्हें अपनाने से मनुष्य के सभी पाप कर्म क्षमा हो जाते हैं। यह सर्वथा मिथ्या सिद्धान्त है। यदि ऐसा होता तो उन मतों का कोई अनुयायी रोग आदि कष्टों से दु:खी न होता क्योंकि रोग आदि भी तो अशुभ व पाप कर्मों के कारण ही होते हैं। जब उनके सभी पाप क्षमा हो गये तो फिर उस मत के अनुयायियों में रोग का कारण क्या है? इससे इस मान्यता की असत्यता व वास्वविकता का पता चलता है। ईश्वर यदि पाप क्षमा करने लगे तो जिन लोगों के साथ किसी ने अन्याय किया होता है, ईश्वर उसका अपराधी बन जाता है। ईश्वर द्वारा पाप क्षमा करने की बातें सर्वथा मिथ्या एवं अतार्किक हैं। इस पर विश्वास नहीं करना चाहिये और सभी मनुष्यों को सभी मनुष्यों तथा इतर प्राणियों के प्रति सद्व्यवहार व श्रेष्ठ वेदोक्त कर्मों को करके अपने जीवन को श्रेष्ठ व मोक्ष मार्ग पर प्रवृत्त करना चाहिये जैसा कि हमारे ऋषि मुनि व वेदों के विद्वान आचार्य किया करते थे। आधुनिक काल में ऋषि दयानन्द का जीवन भी ईश्वर के न्याय से डर कर सदा सद्कर्म करने का आदर्श उपस्थित करता है। ऋषि दयानन्द के जीवन का अध्ययन एवं अनुकरण कर हम अपने जीवन को श्रेय मार्ग पर ले जा सकते हैं।

हमारा सौभाग्य है कि इस जन्म में हम मनुष्य बने हैं। परमात्मा ने हमें बुद्धि दी है तथा वेदों का ज्ञान हमें सुलभ है। हमने पूर्वजन्म में पुण्य कर्मों को अधिक किया था जिसके अनुसार हमें मनुष्य जन्म मिला है। इस जन्म को और अधिक श्रेष्ठ व महत्ता से युक्त करना हमारा कर्तव्य है। इसके लिए वेदाध्ययन सहित ऋषियों के बनाये भ्रान्तियों से सर्वथा मुक्त ग्रन्थों का अध्ययन व स्वाध्याय करना हमारा कर्तव्य है। इन ग्रन्थों का अध्ययन कर हमें ईश्वर, जीवात्मा तथा सृष्टि के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान होता है। हम ईश्वर की उपासना के महत्व से परिचित होते हैं तथा उसे विधि विधान पूर्वक कर अपना वर्तमान एवं भावी जीवन सुधारते हैं। अग्निहोत्र देवयज्ञ भी एक पुण्यकारी एवं सुख वा कल्याण प्रदान करने वाला कर्म है। इससे वायु, जल, पर्यावरण की शुद्धि तथा रोगों से रक्षा एवं उनका निवारण होता है। मनुष्य स्वस्थ एवं दीर्घजीवी होता है। यज्ञ करने वाले मनुष्य के यज्ञीय कार्यों से जितने मनुष्यों व इतर प्राणियों को लाभ पहुंचता है, उतना पुण्य इसके कर्म के खाते में जमा हो जाता है जो इस जीवन सहित पुनर्जन्म होने पर प्राप्त होता है। अत: हमें मनुष्य बनकर आकृति मात्र से मनुष्य नहीं रहना है अपितु वेद, दर्शन, उपनिषद, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों का अध्ययन कर सच्चा मानव व धर्मात्मा बनना है। धर्मात्मा ही मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है। हमारे सभी ऋषि मुनि तथा राम, कृष्ण व दयानन्द सच्चे धर्मात्मा थे। इनके जीवन से भी हमें प्रेरणा लेनी चाहिये। हमारे इस लेख में परमात्मा ने हमें मनुष्य क्यों बनाया है, इसका उत्तर देने का प्रयास किया है। हम आशा करते हैं कि इस लेख से हमारे पाठक महानुभाव लाभान्वित होंगे।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन: 9412985121

फायदों के लिहाज से केले को कम मत आंकिए

फलाहार का नाम आते ही लोगों का ध्यान प्राय: महंगे फलों की ओर ही जाता है। कहा जाता है कि फलों का नियमित सेवन अच्छा तो है पर यह अमीरों के ही वश की बात है। साथ ही यह भी कहा जाता है कि फलाहार हमारे सामान्य दैनिक भोजन का मुकाबला नहीं कर सकता। फलाहार से अपेक्षित शक्ति और सामर्थ्य भी प्राप्त नहीं की जा सकती। परन्तु ये बातें भ्रमपूर्ण हैं। डॉ. एलन वॉकर ने अपने वर्षों के शोध के बाद 'न्यूयार्क टाइम्स' के 15 मई 1987 के अंक में छपे अपने एक लेख में बताया था कि प्राचीन नर कंकालों के सूक्ष्म परीक्षण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वे पूर्णत: शाकाहारी थे और बीमार नहीं पड़ते थे।

सामान्यत: जो भोजन ग्रहण किया जाता है वह सही हो। साथ ही यह भी जरूरी है कि वह पूरी तरह आसानी से पचने वाला भी हो। जो भोजन ठीक तरह पच नहीं पाता वह देर सबेर विषाक्त तत्वों को जन्म देता है और परिणामस्वरूप छोटे-बड़े रोग उत्पन्न होते हैं। अनेक गुणों, मूल्य और उपलब्धता देखते हुए केले जैसे फल के बारे में यह कहा जा सकता है कि वह एक किफायती और आदर्श फल है। आवश्यक पोषक तत्वों और ऊर्जा की दृष्टि से केला अन्य फलों से कहीं आगे है। इसमें सन्देह नहीं कि केले में मुख्य भोजन के गुण मौजूद हैं। प्राकृतिक जीवन के समर्थकों और विद्वानों के अनुसार केला ही एकमात्र ऐसा सर्वसुलभ फल है जिससे हम कम मूल्य में पर्याप्त मात्रा में पोषक तत्व प्राप्त कर सकते हैं।

दक्षिण भारत में केले को पर्याप्त महत्व प्राप्त है। अनेक स्थानों पर केलों की विभिन्न किस्में मिल जाती हैं। केले उबालकर खाने का भी चलन है। केले को घरों में और खाने की मेज पर पर्याप्त महत्व प्राप्त है। हर उम्र के लोग केले बड़े चाव से खाते हैं। एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि केले के साथ हरी सब्जियों और मौसमी फलों को शामिल कर लिया जाए और उपयुक्त श्रम भी किया जाए तो रोग दूर भागेंगे और शरीर मानसिक व शारीरिक रूप से स्वस्थ बना रहेगा। केले से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है।

केले के सेवन में थोड़ी सी सावधानी रखी जाए तो और भी अच्छा होगा। पूरी तरह पके केले ही खाने चाहिए। कच्चे या अधपके केले सुपाच्य नहीं होते। कच्चे केलों की सब्जी बनाकर खाई जाए तो वह भी स्वादिष्ट और पौष्टिक होती है पर अधिक तेज मिर्च-मसालों और चिकनाई से बचना चाहिए। खांसी, सिरदर्द, जुकाम, माइग्रेन, कब्ज आदि रोगों में नियमित केले के सेवन से पर्याप्त लाभ मिलता है।

-हेल्थ डेस्क।

जीवन को सार्थक बनाना है तो हँसिये

❑ डॉ. भवानी शंकर

आज के तनावग्रस्त माहौल में जीवन में हँसने-हँसाने के क्षणों का तेज़ी से लोप हो रहा है। हँसने की सीमा कम हो रही है, अन्तराल बढ़ रहा है और यह एक चिन्ता का विषय है।

आज से चालीस वर्षों पहले-आदमी प्रतिदिन कम से कम 20 मिनट अवश्य हँसता था। लेकिन बेहतर जीवन स्तर एवं विकसित जीवन शैली के बाद भी उसका हँसना मात्र 6 मिनट रह गया। और इतने कम समय की हँसी से हम बहुत सारे चिकित्सीय लाभों से वंचित होते जा रहे हैं।

कहा जाता है कि सच्ची हँसी सच्ची प्रार्थना के समान होती है क्योंकि यह हमारे शरीर की अन्तरात्मा से निकलकर बाहर आती है। हमारी हँसी से प्रकृति गूँजती है और बार-बार यह प्रतिध्वनित होकर प्रकृति को सुखमय बनाती है। यह हमारे पूरे शरीर को उद्वेलित करती है। कभी किसी शिशु को हँसते हुए देखिए, हँसते समय उसके पूरे शरीर में कंपन होता है, उसके शरीर की हर कोशिका में इसका संचार होता है और हँसी- पवित्र एवं निश्छल होती है।

हर आदमी हँसना चाहता है, हँसना उसका स्वभाव है लेकिन आज के दौर में जीविका चलाने के लिए उसपर इतना बोझ हो गया है, प्रतिस्पर्द्धा में टिके रहने के लिए उसकी चिन्ताएँ इतनी बढ़ गयी हैं कि उसे नैसर्गिक मुस्कान और हँसी के लिए मोहलत तक नहीं मिलती। विश्व जनसंख्या संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार मौजूदा दौर में हर तीसरे घर में एक तनाव, क्रोध एवं अवसाद का शिकार मनोरोगी मिल सकता है। आज की दुनिया के बहुसंख्यक किसी न किसी मानसिक समस्या से ग्रसित हैं जो आगे चलकर गुस्सा, चिडचिड़पिन, कमजोर स्मरण शक्ति, अवसाद, हीनभावना, माइग्रेन, अनिद्रा, मिर्गी, हिस्टीरिया, सेक्स-कुण्ठायें जैसे भयंकर परिणामों को जन्म देती है। आज का पढ़ा लिखा इंसान बेरोजगार है, परेशान है, बदहवास है, चिन्तातुर है, हँसने का तो कोई हाशिया ही नहीं है उसके पास। कोई अपने काम से इतना मशगूल है कि उसकी पास हँसने की फुर्सत नहीं है। हँसी के बिना आदमी तनाव से इस तरह बोझिल हैं कि कई तरह की बीमारियाँ और पेचीदगियाँ उसे अपना शिकार बना रही है।

आज के सिनेमा एवं दूरदर्शनवालों ने तो मानो हमारी हँसी को उम्रकैद में डाल दिया है। ऐसी-ऐसी फिल्में एवं सीरियल बनाते हैं जिनसे क्रोध, अवसाद, हिंसात्मक प्रवृतियाँ जन्म लेती है। यद्यपि कुछ सीरियल एवं फिल्में हँसाने वाले भी हैं लेकिन उनकी संख्या काफी कम होती है।

एवं हँसी के दो प्रकार है- एक वह जो निर्विकार, निश्छल, उन्मुक्त होती है। दूसरी हँसी वह है जो कृत्रिम एवं खोखली होती है। विक्षिप्त हँसी, अल्हड़ हँसी, उपहासजनक हँसी, व्यंग्यात्मक हँसी-ये सभी कृत्रिम हँसी के विभिन्न रूप हैं स्त्रियों की निश्छल एवं उन्मुक्त हँसी सौंदर्यशास्त्र का अमोद अलंकरण है। लेकिन आज के संक्रमिक समय में जो हँसी का स्वरूप है वह खतरनाक संकेतों से भरी हँसी है।

अब तो नकली हँसी-खरीदने के लिए हमें हास्य क्लबों का सहारा लेना पड़ रहा है। किसी चीज का होना न होना बाजारों में तय किया जाने लगा है। कौन कितना हँसेगा यह तय करने का ठेका भी बाजार ने ले लिया हैं। दुनिया के तमाम शहरों और कस्बों में लाफिंग क्लब बन रहे है। इन क्लबों में मध्यम वर्गीय लोग होते हैं जो किसी पार्क में या नदी के किनारे जोर-जोर से ठहाके लगाते हैं। लेकिन इन ठहाकों की गूँज एवं प्रतिध्वनियाँ वादियों में नही लहरातीं। भारत में 400 से अधिक हास्य क्लब हैं जो पैसे लेकर लोगों को हँसाते है। व्यक्ति के अनमोल रत्न के साथ यह कैसा मजाक है? हँसी तो शरीर के भीतर से आनी चाहिए। इसे बाजार में खरीदना ठीक नहीं। नहीं तो कुछ दिनों के बाद विदेशी लोग हँसी का पेटेन्टीकरण कर लेंगे।

आज की दुनिया नाभिकीय विनाश के कगार पर खड़ी है, आतंकवाद इसे अपने आगोश मे ले चुका है, सभी के मन में एक संग्राम सा छिड़ा है, हम खुद से ही संघर्ष कर रहे हैं। यदि हमारा मन शान्त हो जाए तो ये संघर्ष एवं अन्तर्द्वन्द्व स्वतः समाप्त हो जाएँगे। और मन को शान्त कर सकती है तो हमारी हँसी।

हँसी के फायदे- दस मिनट की हँसी आपको दिन भर तरोताजा रखती है। हँसने से चेहरे की माँसपेशियों का तनाव कमता है एवं चेहरे पर लालिमा आती है। हँसने से फेफड़ों का अच्छा खासा व्यायाम हो जाता है। फलतः फेफड़ों में अधिक ऑक्सीजन की पूर्ति होती है इसलिए दमा रोगियों के लिए हँसी लाभपद्र है।

आदमी अकेला प्राणी है जो ऊबता है और आदमी अकेला प्राणी है जो हँसता भी है। स्थायी ऊब विनाशकारी होती है, यह मनुष्य के वजूद को समाप्त कर देती है। ऊब से मुक्त होने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण के साथ हँसी ज़रूरी है। हँसी तनाव को कम करती है। तनाव पैदा करने वाले हारमोन एनिनेफ्नि एवं कार्टिसौल के स्तर को हँसी कम करती है। हँसने से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता मज़बूत होती है।

हँसी रक्त चाप को नियंत्रण में रखती है। तनाव बढ़ानेवाले हारमोन में कमी आती है। साथ ही हृदय की मांसपेशियों को शुद्ध ऑक्सीजन भी मिलती है क्योंकि हँसी रक्त संचार को बढ़ाती है। हँसने से कुदरती दर्द निवारक एंडोर्फिन (ENDORFIN) के स्तर में वृद्धि होती है जो जोड़ो के दर्द एवं मांसपेशियों के खिचाव को कम करता है।

डिमेन्शिया एवं एल्जाइमर जैसी याददाश्त खोने वाली बीमारियों के लिए यह एक उपचार है। हँसी एक एरोबिक व्यायाम भी है। हँसी से आँखों में खिंचाव से अश्रु-ग्रन्थियों में संकुचन होता है। आँखों में नमी आती है जो इन्हे चमक देने का काम करती है। इसे बाँटने वाला दरिद्र नहीं बनता लेकिन पाने वाला खुशहाल हो जाता है।

पति-पत्नी के पारस्परिक सम्बन्धों में यदि थोड़ा सा हास्यभाव आ जाए तो घर मंदिर बन जाता है। और अंत में, हँसी प्रकृति की अद्भुत देन है, यह ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक अलौकिक एवं अनुपम उपहार है जो केवल मनुष्य को दिया गया है, पशु-पक्षियों को नहीं यह एक ऐसी सम्पदा है जिसे आप जितनी उदारता से खर्च करें, आपका जीवन उतना ही स्वस्थ एवं खुशगवार बनेगा। यह व्यक्ति के आचरण एवं सौंदर्य के आकलन का एक सशक्त पैमाना है। यह आपकी अमूल्य धरोहर है, इसे कभी नहीं खोइए। दुनिया को यदि हसीन बनाना है, वातावरण उल्लासमय बनाना है तो हँसना एवं हँसाना सीखिए और तभी आपका जीवन भी सार्थक हो जाएगा।

-अनुग्रह पुरी कॉलोनी, गया-823001

कल्पपुरुष का महायज्ञ और उनका गौरवपूर्ण जीवन

❑ अखिलेश आर्येन्दु

महर्षि दयानन्द ने वैदिक, धर्म, संस्कृति एवं समाज के उद्धार के लिए युगान्तरकारी कार्य किए। वे देश के जिस प्रान्त में गये वहां केवल उपदेश, शास्त्रार्थ प्रवचन और सम्भाषण ही नहीं किए बल्कि ऐसे कार्य भी किये जिन्हें श्रेष्ठतम् कर्म के अर्न्तगत माना गया है। अथर्ववेद में **'श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा'** और **इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अपघ्नन्तो अराव्णः।** कठिन पुरुषार्थ और परिश्रम से जीवन को आप्तकाम बनाते हुए सत्कर्मों को करते हुए, ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए पापियों का नाश कर देना चाहिए और सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने के लिए जीवन को समर्पित कर देना चाहिए। वेद के ऋचाओं के मर्म को अपने जीवन में जो उतार लेता है, वह युग निर्माण का निर्भान्त योद्धा बन जाता है। महर्षि दयानन्द जब अपने आत्मजयी जीवन निर्माण को पूरा करके संसार के उद्धार के लिए निकले तो उन्होंने समाज के हर वर्गो के हितार्थ यथायोग्य उपदेश, प्रवचन, प्रेरणा और ज्ञान प्रदान किया। वे जहां भी गए वहां ऐसे ज्ञान आलोक-रश्मि को बिखेरा जिससे छाए सम्पूर्ण तमस का नाश हो गया। महर्षि देश के उन नगरों, शहरों, कस्बों और ग्रामों तक गए जो अपनी पुरातन संस्कृत, कला, व्यवहार, लोक-शिक्षा और धर्म को खो चुके थे या खोने के कगार पर थे। उन्होंने उन स्थानों पर जाकर सत्य सनातन वैदिक धर्म, संस्कृति, कला और शिक्षा को पुर्नस्थापित ही नहीं किया बल्कि उनकी उपयोगिता, प्रभाव एवं स्वरूप को अभिज्ञापित किया। महर्षि दयानन्द ने संस्कार-विधि में पंच महायज्ञों का बहुत ही व्यावहारिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक धार्मिक, सामाजिक और पर्यावरणीय-दृष्टि से प्रभावपूर्ण एवं भावपूर्ण वर्णन किया है। यज्ञ का जो स्वरूप उन्होंने अपने कालजयी ग्रन्थों में रखा है, वह व्यक्ति, परिवार, समाज, संस्कृति एवं लोक जीवन के लिए अद्वितीय कहा जाना चाहिए। यज्ञ उनके लिए केवल यज्ञ कुण्ड में डाली गई घृत एवं शाकल्य की साधारण आहुति नहीं है बल्कि यज्ञ को उन्होंने सम्पूर्ण सत्कर्मो के व्यापक दायरे में प्रतिष्ठित किया है।

महर्षि ने यज्ञ को सामाजिक संगठन, राष्ट्रीय एकता एवं आपसी सौहार्द के निहितार्थ संस्थापित किया ही व्यक्ति के बाह्य एवं आन्तरिक पर्यावरण, उत्थान एवं विकास के लिए आवश्यक माना। मेरे विचार से आज आर्य समाज एवं आर्यसमाजेत्तर समाजों में यज्ञ का जो स्वरूप एवं क्रियाविधि चलाई जा रही है वह किसी भी दृष्टिकोण से महर्षि के मन्तव्य और उद्देश्य की पूर्ति नहीं करते हैं। महर्षि के बाद 50 वर्षो तक आर्य समाज ने या के व्यापक अर्थ को व्यवहारिक रूप देते हुए-स्वदेश-यज्ञ, संस्कृति-यज्ञ, ज्ञान-यज्ञ, कर्म-यज्ञ, स्वाधीनता-यज्ञ, स्वदेशी-यज्ञ, नारी-यज्ञ, सर्वकल्याण-यज्ञ, चरित्र-यज्ञ, वेद प्रचार-प्रसार-यज्ञ, समाज सुधार-यज्ञ एवं विश्व कल्याण-यज्ञ निरन्तर किया। जिससे सम्पूर्ण भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर सुधार ही नहीं हुआ बल्कि सांस्कृतिक जागृति (चेतना) भी पैदा हुई। यदि कांग्रेस में 85 प्रतिशत लोग दयानन्द और आर्य समाज के कार्यो से प्रेरणा लेकर कार्यकर रहे थे तो वह आर्य समाज द्वारा किये इन यज्ञों का भी प्रभाव था। सम्पूर्ण भारतीय समाज को वेद का परम आलोक प्रदान करने, भटके हुओं को सत्य का मार्ग बताने, सम्पूर्ण मानवता को अंधेरे से निकालकर उजाले में लाने और सबका हित करने में लेकर मानव जीवन एवं समाज के हर क्षेत्र को निखारने का जो युगान्तरकारी कार्य दयानन्द ने किया उसका वर्णन करना असम्भव है।

देव दयानन्द सृष्टि के पिछले पांच हजार वर्षो में, ऐसे महामानव हुए जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन को महायज्ञ की वेदी पर होम कर दिया। 'मानवता का महायज्ञ महामानव के द्वारा ही सम्पन्न कराया जा सकता है' इस कालजयी सत्य को यदि किसी ने सम्पूर्णता के साथ उद्घाटित किया तो वे केवल और केवल दयानन्द ही थे। **'यथा नामे तथा गुणे'** की उक्ति सम्पूर्णता के साथ यदि किसी के जीवन में उद्घाटित हुई है। तो वे दयानन्द ही थे। मानव जीवन की सम्पूर्णता जीवन के चार पुरुषार्थों में ही निहित है। यदि किसी ने इसे सत्यता और भव्यता के साथ सारे समाज के सामने उद्घाटित किया तो दयानन्द ही थे। इसलिए दयानन्द को कोसने या उनके चरित्र और कार्यों से आतंकित होने वालों को भी दयानन्द के सामने नतमस्तक होने पर विवश होना पड़ता है। जिसका सम्पूर्ण जीवन ही या हो उसके सामने सृष्टि की बड़ी सी बड़ी विचार धारायें खण्डित होते दृष्टिगोचर होती है। इसलिए दयानन्द के सामने जो भी आया, भाग खड़ा हुआ। जिस वैदिक संस्कृति ने सारे विश्व को ज्ञान का प्रकाश प्रदान किया वह अपनी निर्बलताओं के कारण अखण्ड-स्वरूप में स्थिर न रह सकी। जिसका परिणाम यह हुआ कि सारा समाज कूपमण्डूक और पतन के रास्ते पर चलकर अपना दिव्यत्व ही खोने लगा। जिन आदर्शो, मूल्यों और महानतम विचारों के कारण सारा विश्व इसे अपना गुरु मानता था, वे सारे आदर्श, मूल्य और विचार अनेक विसंगतियों, विकृतियों और विडम्बनाओं के कारण विलुप्त हो गए थे। यहां तक कि वेद को भी राक्षसी के द्वारा उठा ले जाने की धारणा पुष्ट हो चुकी थी। लेकिन दयानन्द ने अपने आलोकिक पुरुषार्थ के कारण सभी वेद 'विरोधी मान्यताओं, कुरीतियों, अंधविश्वासों पाखण्डों, कुप्रवृतियों, अन्यायों, क्रूरताओं, प्रपंचों, असत्यों, हिंसाओं और आतंको को जड़मूल से समाप्त ही नहीं किया बल्कि सारे समाज को वेद का महान् पुण्यवादी और आलौकिक ज्ञान से ओतप्रोत भी किया। यह सब देव दयानन्द के महाज्ञान और कर्मयज्ञ का महाप्रताप था। इसलिए जब हम आज दयानन्द को याद करते हैं तो उनका महायज्ञ भी हमें परवस याद आ जाता है। और हम उस देवादिदेव को शत्शत् बार नमन करने के लिए नतमस्तक हो जाते हैं।

– 33, ग्रीन पार्क (मैन), नई दिल्ली-110016

दुःखद समाचार

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के परम सहयोगी एवं आर्य समाज राजकोट, गुजरात के प्रधान श्री रंजीत भाई परमार का हृदय गति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। श्री रंजीत भाई पिछले 30 वर्षो से टंकारा में आयोजित ऋषि बोधोत्सव पर ऋषि लंगर का प्रबन्ध करते थे। आज हमने परम सहयोगी खो दिया है। **टंकारा ट्रस्ट एवं टंकारा समाचार परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।**

VEDIC WORSHIP

❑ **Arun Kumar Gupta**

In the whirlwind of modern existence, where materialism often dominates our pursuits, the ancient practice of Vedic worship emerges as a guiding light, illuminating the path to spiritual enlightenment and inner peace. Amidst the chaos of day life, amidst the relentless pursuit of wealth and success, Vede wership offers a sanctuary-a sacred space where individuals can connect with something greater than themselves and experience profound spiritual nourishment.

Vedic worship is not merely a set of rituals or ceremonies; at is a profound philosophy-a way of life that embodies revereo, devotion, and self-realization. Rooted in ancient tradi- tion yet imbued with timeless wisdom, Vedic worship pro- vides a framework for understanding the universe and our place within it.

At its core. Vedic worship is a celebration of the divine-a recognition of the inherent divinity that resides within each of sand permeates all of creation. Through prayer, meditation, and acts of devotion, practitioners of Vedic spirituality seek to cultivate a deep and intimate connection with the divine, transcending the limitations of the ego and experiencing union with the universal consciousness.

Unlike some religious practices that focus on external ritu- als or dogmatic beliefs, Vedic worship encourages individuals to embark on a journey of self-discovery and self-transcen- dence. It invites us to explore the depths of our own being, to confront our fears and insecurities, and to awaken to the truth of who we really are.

Throughout history, enlightened beings and spiritual masters have extolled the virtues of Vedic worship as a transformative path to spiritual awakening. From the ancient sages of India to modern-day gurus, practitioners of Vedic spirituality have borne witness to the profound power of sincere devotion and earnest seeking on the spiritual journey.

The Gayatri Mantra, revered as the most sacred mantra in Vedic tradition, encapsulates the essence of Vedic worship. With its invocation of divine light and wisdom, it serves as a powerful tool for spiritual transformation and enlightenment, guiding practitioners on the path to self-realization and liberation.

Moreover, Vedic worship extends beyond the individual to encompass the welfare of society and the world at large. By cultivating qualities such as compassion, generosity, and al- truism, practitioners of Vedic spirituality contribute to the creation of a more harmonious and compassionate world, where peace and prosperity flourish for all beings.

In today's fast-paced world, where stress and anxiety abound, the teachings of Vedic worship offer a much-needed antidote. They remind us that true happiness and fulfillment cannot be found in external possessions or achievements but in the cultivation of inner peace, contentment, and spiritual wisdom.

As we navigate the complexities of modern life, let us draw inspiration from the timeless wisdom of Vedic tradition and embrace the practice of Vedic worship as a means of unlock ing our highest potential and realizing our true nature. In do- ing so, we embark on a journey of self-discovery, inner trans- formation, and spiritual fulfillment-a journey that leads us ever closer to the divine.

In the midst of the bustling world, where the pursuit of ma- terial wealth often takes precedence, the profound teachings of Vedic worship serve as a beacon of light, guiding us towards a deeper understanding of ourselves and the universe. Through the practice of Vedic rituals, prayers, and contempla- tion, we embark on a journey of self-exploration and spiritual growth, discovering the inherent divinity that resides within us and all of creation.

Vedic worship is not bound by the confines of time or space; it transcends cultural boundaries and religious doctrines, offering a universal path to spiritual awakening and enlightenment. Whether practiced in the temples of India, the yoga studios of the West, or the quiet corners of our own homes, Vedic worship invites us to connect with the eternal truths that lie at the heart of existence.

At its core, Vedic worship is a celebration of the interconnectedness of all life-a recognition that we are not separate from the divine, but rather an inte- gral part of it. Through the chanting of sacred mantras, the performance of sacred rituals, and the offering of prayers and devotions, we awaken to the divine presence that permeates every aspect of our being.

The teachings of Vedic worship remind us that true happiness and fulfillment cannot be found in external possessions or worldly achievements, but in the cultivation of inner peace, contentment, and spiritual wisdom. By turning inward and connecting with our higher selves, we discover a source of joy and fulfillment that is beyond the reach of material wealth or transient pleasures.

In today's fast-paced and materialistic world, the practice of Vedic worship offers a much-needed respite-a sanctuary where we can retreat from the pressures of daily life and reconnect with our true essence. Through the practice of meditation, prayer, and self-reflection, we quiet the restless chatter of the mind and attune ourselves to the deeper rhythms of the universe.

Moreover, Vedic worship is not just a solitary pursuit; it is a communal endeavor that brings people together in shared devotion and reverence for the divine. Whether gathered in

(Remain Matter on Page No. 13)

વેદ વિચાર

વૈદિક મંત્રોનું અર્થઘટન કયા સંદર્ભમાં કરવામાં આવે છે તે અનુસાર દરેક વેદ મંત્રના અનેક અર્થ નીકળી શકે છે. આમ, વેદમાં દરેક પ્રકારનું જ્ઞાન સમાવિષ્ટ છે. વેદ મંત્રના દરેક શબ્દનું અર્થઘટન તેની "મૂળ ધાતુ" અનુસાર જ થવું જોઈએ, અને નહીં કે નિત્ય ક્રમમાં કરવામાં આવતા સર્વ સામાન્ય અર્થથી. જો આમ કરવામાં ન આવે તો અર્થનું અનર્થ થઇ જાય છે.

ઉદાહરણ તરીકે, સંસ્કૃતમાં 'ગો' ધાતુનો વાસ્તવિક અર્થ છે 'ગતિમાન'. પણ કેટલાંક મુર્ખાઓ બધાં જ વેદમંત્રોમાં 'ગો' ધાતુનો અર્થ 'ગાય' કરી મંત્રોના ખોટા અર્થ કરે છે.

વેદમાં માત્ર આધ્યાત્મિક જ્ઞાન જ નહીં, પણ શ્રેષ્ઠ જીવન જીવવા માટેનું જ્ઞાન, આરોગ્ય અને ઔષધિઓ સંબંધી જ્ઞાન, કુટુંબ અને સમાજનું જ્ઞાન, અર્થશાસ્ત્ર અને ગણિતનું જ્ઞાન, ભૌતિકશાસ્ત્ર અને રસાયણશાસ્ત્રનું જ્ઞાન, એમ બધાં જ વિષયો પરનું જ્ઞાન સમાવિષ્ટ છે. વર્ષો પ્રયાસ કર્યા બાદ હું હજુ પણ એ વિષયની શોધમાં છે કે જેને વેદમાં આવરી લેવામાં આવ્યો ન હોય.

વેદમાં બધાં જ પ્રકારનું જ્ઞાન - ભૌતિક વિજ્ઞાન, રસાયણ વિજ્ઞાન, સમાજ શાસ્ત્ર, ધર્મ શાસ્ત્ર, ગણિત, ઈજનેરી વિદ્યા - તેના મૂળભૂત સ્વરૂપમાં છે.

વેદમાં જહાજ અને વિમાન બનાવવાની રીતો પણ છે. વેદમાં ગણિતની દશાંશ પધ્ધતિ પણ છે. વેદમાં ગુરુત્વાકર્ષણ અને વિદ્યુતશક્તિનું જ્ઞાન પણ છે.

(1)ઋગ્વેદમાં ભૌતિક અને આધ્યાત્મિક વિષયોનું જ્ઞાન છે (2) યજુર્વેદમાં મનુષ્યના યોગ્ય કર્મોનું જ્ઞાન છે.

(3)સામવેદ ભક્તિ અને ઈશ્વર ચિંતનનો વિષય છે. (4) અથર્વવેદમાં આ ત્રણેય વેદોના અમૂલ્ય જ્ઞાનને વ્યવહારમાં ઉતારવાની - જ્ઞાન, કર્મ અને ચિંતન - પદ્ધતિનું જ્ઞાન છે.

વેદમાં તર્ક અને વિજ્ઞાન વિરુદ્ધ કાઈ જ નથી.

વેદ શ્રેષ્ઠત્તમ આધ્યાત્મિક જ્ઞાનનો જ નહીં, પણ ભૌતિક તત્વજ્ઞાનનો પણ ભંડાર છે.

મધ્યયુગમાં લખાયેલાં ઘણાં ધાર્મિક ગ્રંથોથી વિપરીત, વેદમાં પૃથ્વી સપાટ નથી પણ ગોળ છે. વેદમાં પૃથ્વી સૂર્યની પરિક્રમા કરે છે. વેદ અનુસાર ચુંબકીય ધ્રુવોની વચ્ચે ધાતુનો તાર ફેરવવાથી વિદ્યુત શક્તિ પેદા થાય છે. ગુરુત્વાકર્ષણ અને વિદ્યુતબળો "ઇન્વર્સ સ્ક્વેર લો" અનુસરે છે. વેદમાં ગ્રહોના વલયો લંબગોળ છે. વેદ અનુસાર બાઈનરી લોજીકથી અત્યાધુનિક ગણતરીની નવી રીતો વિકસાવી શકાય છે.

આયુર્વેદ અને ધનુર્વેદ જેવા ઉપવેદોમાં અનુક્રમે ચિકિત્સા શાસ્ત્ર અને યુદ્ધ શાસ્ત્ર વિષે જ્ઞાન આપવામાં છે.

વેદથી મોટું વૈજ્ઞાનિક પુસ્તકાલય હજુ સુધી મને મળ્યું નથી.

ઘણાં ધર્મ સંપ્રદાયો આવા વૈજ્ઞાનિક અભિગમને ઈશ્વર-નિંદા માને છે. આ ધર્મ સંપ્રદાયોમાં તેમના ઈશ્વર, ધર્મગ્રંથ કે દેવદૂત સામે તર્કપૂર્ણ અને વૈજ્ઞાનિક પ્રશ્નો પૂછનારને સખત દંડ આપવામાં આવે છે.

વેદમાં સાચી ધર્મનિંદા અને ઈશ્વરનિંદાને ખુલ્લી છુટ છે. વેદ કહે છે કે મુક્ત ચિંતન, અને વૈજ્ઞાનિક અને તર્કપૂર્ણ અભિગમ રાખનાર ઈશ્વરની વધુ નજીક હોય છે.

"વૈદિક સંસ્કૃત" વેદ સંહિતાની ભાષા છે.

વેદ સંહિતાઓ વ્યવહારિક અને લૌકિક સંસ્કૃતમાં નહીં, પણ વૈદિક સંસ્કૃતમાં લખાયેલી છે. વૈદિક સંસ્કૃત આ સંસારની બધી ભાષાઓનોની જનની છે. વેદનું અધ્યયન કરવા અને તેનું સાચું અર્થઘટન કરવા માટે વૈદિક સંસ્કૃતનું યથાયોગ્ય જ્ઞાન હોવું ઘણું આવશ્યક છે.

વેદ મંત્રોની ગોખણપટ્ટી વ્યર્થ છે.

મંત્રોના અર્થને સમજ્યા વગર તેની ગોખણપટ્ટી કરવી વ્યર્થ છે. વેદના જ્ઞાનને મન, વચન અને કર્મમાં આત્મસાત્ કરવાથી જ વેદનો ખરો અભ્યાસ કર્યો ગણાય.

વેદનું જ્ઞાન અસીમિત છે. દરેક મંત્ર પર મંત્રના અર્થ અને મંત્રમાં છુપાયેલા જ્ઞાનના ઘણાં આવરણો હોય છે. આથી આ આવરણોને તોડી મંત્રોના અર્થમાં ઊંડા ઉતરવાની પ્રક્રિયા આજીવન નિરંતર ચાલતી રહે છે. આ આખી પ્રક્રિયા અત્યંત સુખદાયી હોય છે.

પણ આ પ્રક્રિયા સુખદાયી બને તે માટે વેદ અધ્યયનમાં તલ્લીન થઇ જવું પડે. મંત્રોની ગોખણપટ્ટી કરવાથી વેદ મંત્રોની અનુભૂતિનું સુખ મળતું નથી. ભારતમાં વેદ મંત્રોની ગોખણપટ્ટી કરનારા, વેદ પર વ્યાખ્યાન અને પ્રવચન આપનારા ઘણાં તથાકથિત વેદ વિદ્વાનો છે. આવા વિદ્વાનોને ભલે માન અને ખ્યાતી મળતી હોય, પણ તેમની વિદ્યા પર ખોટા અહંકારના આવરણો ચઢેલાં હોય છે આથી તેઓ પોતે જ પોતાનો આનંદ પ્રાપ્તિ અને આનંદ વૃદ્ધિનો માર્ગ અવરોધતા હોય છે.

પશ્ચિમી વિદ્વાનોના વેદ ભાષ્યો વિકૃત છે.

આધુનિક ભાષાના પ્રયોગથી વેદ મંત્રોનું સાચું અર્થઘટન કરવું શક્ય નથી. આ માટે ગહન ચિંતન, ઊંડું આત્મનિરીક્ષણ, મનની શુદ્ધતા અને યોગિક દિનચર્યા આવશ્યક છે. આમ ન થવાથી વેદ મંત્રોના અર્થનું અનર્થ જ થશે. આવું અનર્થ કરનારાઓમાં આજના સમયના માંસભક્ષી, વ્યાભિચારી, ભોગી-વિલાસી, અહંકારી અને સ્વઘોષિત વેદ વિદ્વાનોનો સૌથી મોટો ફાળો છે.

મેક્સ મૂલર, વિલ્સન, ગ્રીફીથ, જ્હોન વગેરે જેવા તથાકથિત પશ્ચિમી વિદ્વાનોના વેદ ભાષ્યો એકદમ બકવાસ અને વિકૃત છે. આવા તથાકથિત વિદ્વાનોએ જ વેદના અતાર્કિક, અસહજ અને વિસંગત ભાષ્યો રચ્યાં છે.

વેદનું અધ્યયન કરવા માટે આવા ભાષ્યોનો ઉપયોગ કરતા પહેલાં ચેતવું જોઈએ.

देश की नैय्या मझधार में है, इसे पार लगाओ

❑ **महेश बी. शर्मा**

योग वाशिष्ठ के अनुसार, 'यदि विवेक सम्पन्न हो तो युवावस्था ही जीवन का श्रेष्ठ समय है। युवा शक्ति में ऊर्जा की भरमार है और है स्मरण शक्ति का खजाना। युवा पीढ़ी सद्चरित्र बनकर विवेक व विनम्रता को गले लगाकर किसी कार्य को करने का दृढ़संकल्प कर ले तो वो निश्चय ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं। हजारों वर्षो के इतिहास को देखें तो पायेंगे कि युवाओं ने भारत में भारतीय संस्कृति के मानवीय मूल्य और गुणों को अपनाकर जैसे स्नेह, सहयोग, समकत्व, सहिष्णुता, सेवा, सौहार्द्र, संयम, सहभागिता, नैतिकता, मर्यादा, शालीनता, विनयशीलता, सहनशीलता, सत्य, अहिंसा एवं अपरिग्रह तथा दया-करुणा व परोपकार तथा त्याग-तपस्या के बल पर भारत के गौरव व गरिमा को विश्व के रंगमंच पर बरकरार रखा है। सतयुग से कलयुग के लम्बे अन्तराल में व आज भी विश्व के सपने को साकार किया है और आगे भी करेंगे, जिनमें प्रमुख है-मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज कृष्ण, भगवान बुद्ध व भगवान महावीर, गुरु नानक, सन्त रैदास, महात्मा गांधी, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द एवं डॉ. अम्बेडकर तथा आजादी की लड़ाई में शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद व वीर सावरकर आदि।

इनके कारनामों व क्रियाकलापों जो इन्होंने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक आदि क्षेत्रों में किये हैं, वो विश्व के मानव-मात्र के जबान पर तत्कालीन समय में रहे हैं और आज भी जन-जन की जबान पर हैं तथा भविष्य में भी रहेंगे। तभी तो देश व विदेश के मूर्धन्य विद्वानों ने मुक्तकंठ से प्रशंसा निम्न शब्दों में की है-1. तकदीर बदल सकते हैं सिर्फ सौ युवा, बशर्ते पुरुषार्थ व संकल्प से लक्ष्यप्राप्ति में जुट जाएं। 2. हे युवक! तुम जिसकी आशा इतनी ऊंची है। तुम जो सत्य की प्राप्ति की आशा रखते हो। किसी भी स्थिति में रहो, न कभी पीछे देखना, न थकना। रॉबर्ट तिजिज। 3. भावनाओं का पुंज और उत्साह का स्रोत ही युवा होने का सबसे बड़ा प्रमाण है। - गणेशशंकर विद्यार्थी। 4. युवकों का उत्साह केवल ताप बनाकर ही न रह जाये, यदि उसमें तप भी मिल जाये तो वह बहुत निर्माणकारी हो सकता है। - जैनेन्द्र कुमार

आज का सच तो यह है कि कुछ लोग लालच में फंसे हुए युवाओं को मार्केट के रूप में देख रहे हैं। विशेषकर राजनेता जो विभिन्न पार्टियों में सिरमौर व झूंठ-मूठ नेतागीरी कर उन्हें अपनी कुर्सी हेतु सहज ही में प्रलोभन देकर भटका रहे हैं। युवा पूंजीपति येन केन प्रकारेण धन बटोर रहे हैं। सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं में लगे अधिकांश युवा भ्रष्टाचार, घूसखोरी व चमचागीरी से पैसों को दोनों हाथों से बटोर कर भोग विलास, भौतिक उपकरणों की खरीद-फरोख्त तथा मौज-मजे में लिप्त होकर युवा जोश में होश खोकर भटक रहे हैं। यह कैसी त्रासदी है और है कैसी विडम्बना, आतंकवादियों का दामन पकड़कर पैसा कमा रहे हैं और हत्या तथा आत्महत्याएं तो खेल बन गया है। इनसे बचें व सुधार करें युवा तभी देश की नैय्या जो मझधार में है, उसको पार लगा सकते हैं।

हां, करोड़ों में आज भी हजारों ऐसे हैं जो आई.ए.यस., आई.पी. एस. डॉक्टर व इंजीनियर, वैज्ञानिक व अच्छे प्राध्यापक बनकर देश को उबारने में लगे हैं। जो सादा जीवन उच्च विचार, **वसुधैव कुटुम्बकम्**, विश्व-बन्धुत्व एवं जियो व जीने दो तथा पाश्चात्य के चक्कर में मत पड़ो, आदि आदर्शो को अपनाकर देश को उबारने में प्रयत्नशील हैं। अंग्रेजी का पूर्ण ज्ञान होते हुए भी हिन्दी को मात्र भाषा मानकर देश-विदेश में अपना अस्तित्व कायम रखने में कटिबद्ध हैं और न्यायाधीश जैसे उच्च पदों को सुशोभित कर 'न्याय में सभी समान है' के शब्दों को सार्थक कर सही न्याय देने में जुटे हैं। आज का युवा बुरा नहीं है।

अस्तु! युवाओ! कमजोर बनाने वाली वस्तुओं को त्यागो व भारतीय मूल्यों को अपनाकर पुरुषार्थ व श्रम से आगे बढ़कर देश की डूबती नैया को पार लगाओ।

न किरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम्।
न किर्वक्ता न दादिति।। ८/३२/१५।।

भावार्थ-उस भगवान इन्द्र की शक्तियों का और उसकी सत्य और मीठी वाणियों का नियम बांधने वाला कोई नहीं है। और कोई नहीं कह सकता कि इन्द्र ने मुझे कुछ नहीं दिया, क्योंकि सबको सब कुछ देने वाला वह इन्द्र ही है।

(Matter of Page No. 11)

temples, ashrams, or community centers, practitioners of Vedic worship come together to chant sacred hymns, perform rituals, and offer prayers in unity and harmony.

The Gayatri Mantra, often hailed as the most powerful mantra in Vedic tradition, serves as a potent tool for spiritual transformation and self-realization. By chanting this sacred mantra with sincerity and devotion, we invoke the divine light and wisdom that reside within us, guiding us on the path to self-discovery and enlightenment.

Furthermore, the practice of Vedic worship instills in us a deep sense of gratitude and reverence for the natural world. By recognizing the divine presence in all living beings and the sacredness of the earth itself, we cultivate a sense of stewardship and responsibility towards the environment, striving to live in harmony with nature and protect the planet for future generations.

In conclusion, the essence of Vedic worship lies in its pro- found teachings and timeless wisdom, offering a pathway to spiritual enlightenment and inner peace in an increasingly chaotic and materialistic world. Through the practice of Vedic gerituals prayers, and meditation, we awaken to the divinity dthat resides within us and all of creation, leading us towards a deeper understanding of ourselves and the universe.ov bus

(The author is President of Arya Samaj Dayanand Marg, City Chowk, Jammu)

मानव उद्धारक देव दयानन्द

❑ स्व. टंकारा श्री अरूणा सतीजा

इतिहास के पन्नों पर क्या ऐसा कोई व्यक्ति आप को मिलेगा जिसने मनुष्य को मनुष्य बना कर धरती पर रहना सिखाया है। वर्ग, देश, जाति, धर्म और काल की दीवारों को गिरा कर जिसने संसार के प्रत्येक मनुष्य को एक ईश्वर पुत्र होने के नाते भाई बना कर मनुष्य और मनुष्य के मध्य खड़े सभी भेदभावों को समाप्त कर एक साथ सुख-दुख बांट कर प्यार से जीवन बिताने की प्रेरणा दी हो। सारा इतिहास ढूंढ लीजिए स्वामी दयानन्द के अतिरिक्त और कोई महापुरुष आप को ऐसा इस ध रती पर नहीं मिलेगा।

महर्षि ने धरती के प्रत्येक मनुष्य को ऐसा रास्ता दिखाया जिस पर चल कर प्रत्येक व्यक्ति दु:ख और अशान्ति से छुटकारा पा कर प्रेम, शान्ति और आनन्द से हंसता हुआ अपनी जीवन यात्रा पूरी कर सकता है। देव दयानन्द ऐसे देवता थे जिन्होंने प्यार का मन्त्र देकर सभी प्रकार के भेदों को मिटाया और जीवन का ऐसा दर्शन दिया जो युक्ति, तर्क और विज्ञान की कसौटी पर खरा उतरता है।

आधुनिक युग को प्रकाश की पहली किरण देने वाले महर्षि दयानन्द ही थे। वह महान क्रान्ति कारक थे। उनकी क्रान्ति सजक थी प्रेरक थी। शान्ति और प्रेम के अस्त्र से बुद्धि का विकास उनका ईण्ट था। वह क्रान्ति तो चाहते थे पर न राज्य की न ही नाम की। वह तो बस बदलना चाहते थे प्रत्येक के सोचने का ढंग। सोच ही तो सच्चा परिवर्तन है। वे मनुष्य की एक जाति मानते थे। मानव जाति एक धर्म ''मानव धर्म'' उनका विश्वास था कि ज्ञान का सम्पूर्ण आधार वेद की पवित्र ऋचाओं में समाहित है। उन्होंने बताया वेद ही सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद ईश्वरीय है। वेदों में कोई बात सत्य विज्ञान और प्रकृति के नियमों के विपरीत नहीं है।

स्वामी जी का विश्वास था कि जब तक मनुष्य इस्लाम, ईसाइयत, यहूदी और बोद्ध आदि मतो में बंटा रहेगा तब तक संसार में झगड़े होते रहेंगे। वह चाहते थे इन मजहबी ताकतों को जिन्होंने न जाने कितने इंसानों का खून बहाया है, धरती से मिटा दिया जाए। मनुष्य बस मनुष्य बन कर धरती पर रहे।

वर्तमान प्रपेक्ष में स्वामी जी के इस सत्य सिद्धान्त की कितनी आवश्यकता है। आज भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में जिहादियों की शक्ति बढ़ती जा रही है। अमेरिका तथा रूस जैसे शक्तिशाली देश भी आतंकियों की पाश्विक प्रवृति से चिन्तित है।

जिहादियों की सेना का आई.एस.आई.एस. रक्तपात प्रतिदिन बढ़ रहा है। निर्दोष बच्चों तथा औरतों को भी नहीं बख्शा जा रहा। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में लौह पुरुष भारत के प्रधानमन्त्री विश्व भ्रमण कर महर्षि के मानव उद्धार के सिद्धान्त को ''सब का साथ सब का विकास'' का सन्देश बुलन्द कर रहे हैं। यही जीवन का सार है अन्यथा विनाश ही विनाश है।

महर्षि ने ज्ञान के क्षेत्र में जो दर्शन दिया उसका आधार अध्यात्म व भौतिकवाद का समन्वय है। वह एक महानतम योगी, उच्चतम दार्शनिक तथा गंभीर विचारक थे। जहां अन्धेरा था वहां उजाला दिखाया। जो दिमाग अन्धश्रद्धा से मजहबों के ठेकेदारों ने बन्द कर रखे थे उन्हों ने अपने दृढ़ तर्कों द्वारा खोल दिये। सबको सच्चाई का सद-मार्ग दिखाया। उन्हें ईश्वर पर अटूट विश्वास था। यही विश्वास उनकी शक्ति थी। इस ईश्वरीय शक्ति के आधार पर ही उन्हों ने सारी धरती पर फैले पाखण्डों पर प्रबल प्रहार किये। वह विजयी भी हुए।

वह मूर्ति पूजा, अवतारवाद और छुआछूत के कट्टर विरोधी थे। परन्तु आज मूर्ति पूजा तथा गुरुडम प्रथा समाज को खोखला कर रही है। जहां पूर्व के तपस्वी गुरु अपने ज्ञान के प्रकाश से समाज तथा राज्य का पथ प्रदर्शन करते थे वहीं आज धूर्त व्यक्ति गुरु बनकर भोले भाले लोगों विशेषकर महिलाओं का हर तरह का शोषण कर रहे हैं। इसका मुख्य कारण अज्ञानता तथा अंधविश्वास है। इस अन्धकार को मिटाने के लिए स्वामी जी ने अपना पूरा जीवन लगा दिया।

आज सम्पूर्ण मानव जाति पुन: अज्ञानता के अन्धकार में भटक रही है। महर्षि के सिद्धान्तों तथा विचारों की गहन समीक्षा की आवश्यकता है। ऋषि के पावन बोध पर्व पर आर्यो को अर्थात् श्रेष्ठ पुरुषों को अपने बोध को जागृत करना होगा। महान कार्य सदा बलिदान मांगते है। बलिदानी श्रद्धानन्द त्यागी महात्मा हंसराज, महात्मा गुरुदत्त, पंडित लेखराम तथा युवा देश भक्त भगतसिंह तथा ऐसे सैकड़ो ही नहीं हजारों ने मानव हित के लिए अपना सर्वस्व लुटा दिया, हमारे लिए अनुकरणीय है। हमारा भूत गौरवमय था, हमारा वर्तमान तथा भविष्य भी अति गौरवशाली होना चाहिए।

आज आर्यसमाज संगठन लड़खड़ा रहा है। इसे पुन: संगठित करना होगा। लोगों में एक ईश्वरीय शक्ति में विश्वास जगाना होगा। नि:सन्देह श्रेष्ठ पुरुषों की संख्या कम है, महर्षि तो अकेले थे। सूरज की तरह ज्योतिर्मय स्वामी दयानन्द से प्रकाश लेकर अपने जीवन को पवित्र कर अन्तर के समस्त कलुष धो डालो। जीवन का एक ही लक्ष्य हो मानव मानव के लिए। प्रभु के महान पुत्र योगेश्वर, मानव उद्धारक सत्य के प्रसारक, निर्भय दयानन्द के चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम।

युग-युग तक अमर रहेगी ऋषि दयानन्द की गाथा। मानव उस को स्मरण करेगा, कहकर अपना त्राता। ओ३म् शान्ति:।

महर्षि स्वामी दयानन्द नि:सन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने में महान भूत और भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर है। ऋषि का प्रादुर्भाव मानव को कारागार से मुक्त करने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है ''आर्यवर्त्त उठ जाग''। समय आ गया है नये युग में प्रवेश कर आगे बढ़ (पाल रिचर्ड)।

- प्लाट न. 101, सौम्या अपार्टमेन्ट, बी-9, ध्रुव मार्ग, तिलक नगर, जयपुर

आवश्यक सूचना

आपका लोकप्रिय आर्य मर्यादाओं का समाचार पत्र ''टंकारा समाचार'' इंटरनेट एवम् वट्सअप पर उपलब्ध। सभी सदस्य पाठकों से अनुरोध है कि अपना ई-मेल पता एवम् वट्सअप मोबाइल नम्बर **9560688950** पर **सदस्य संख्या एवम् नाम सहित** भेजे ताकि हम पंजीकृत कर सके जिससे कि आपको उपरोक्त माध्यम से जोड़ा जा सके।

- ट्रस्ट मन्त्री एवम् सम्पादक

(पृष्ठ 1 का शेष)

प्रस्ताव भी बड़ी सुन्दरता से किया जाता है। यह तो आम प्रार्थना है। हे प्रभु! यदि आप मेरी याचना स्वीकार कर देंगे तो मांग पूरी कर देंगे तो आपको सवा किलो का प्रसाद चढ़ाऊंगा/चढ़ाऊंगी। यह सवा किलो से सवा मन, फिर प्रसाद का परिवर्तन चढ़ावा-चादर से लेकर चांदी, सोना, हीरे जवाहरात आदि के रूप में होता है। इसी तरह मंदिरों में, दरगाहों में, चर्चों में अपार सम्पत्ति इकट्‌ठी होती जा रही है। भगवान के पास पहुंचती नहीं दिखती। ठीक, उसी प्रकार जिस प्रकार श्राद्ध पक्ष में पण्डितों, कौवों को खिलाया हुआ पितरों तक स्वर्ग पहुंचता नहीं दिखता।

हजार में से कुछेक की मनोकामना पूरी हुई तो तो हर हजार मुख से प्रचारित होगा कि ऐसी उल्टी-सीधी मनोकमना की पूर्ति भी भगवान करता है, यदि यह कामना/याचना 'सच्चे मन' से की जावे। 'सच्चे मन का तत्व' इसलिए प्रविष्ट करा दिया जाता है कि यदि कामना की पूर्ति नहीं हुई तो अरोप जड़ा सकता है कि तुम्हारा 'मन' सच्चा नहीं था। गणेश जी ने भी दुग्धपान किसी आर्यसमाजी से नहीं किया होगा क्योंकि इस काम के लिए उसका मन सच्चा नहीं माना जायेगा। यदि व्यक्ति आर्यसमाजी है, जानकर किसी गणेश भक्त से उस आर्यसमाजी से अनुरोध भी नहीं किया होगा कि वह गणेश प्रतिमा को दुग्धपान कराये। गणेश जी ने दुग्धपान किया था, इसका कारण Surface Tension को बताते हुए, वैज्ञानिक आधार प्रदान करने का प्रयास जिस भारतीय वैज्ञानिक ने किया था वह भी संस्कारवश पौराणिक परिवार में ही उत्पन्न हुआ होगा। थोड़ा व्यतिरेक हो गया दिखता है लेकिन ऊटपटांग कामनओं की पूर्ति ईश्वर करता है या नहीं इसका स्पष्ट विवेचन आवश्यक प्रतीत हुआ।

वास्तविकता ऐसी नहीं है। वेद का ईश्वर यदि पौराणिकों ईश्वर की तरह क्रिया करता तो मुस्कराता ओर कहता-यह याचक न मुझे समझते हैं और न मेरी रचना, सृष्टि को। इस सम्पूर्ण सृष्टि, केवल यह पृथ्वी ही नहीं, चांद सितारे, असंख्य सूर्य, असंख्य आकाशगंगाएं, इन सबका रचयिता, नियन्ता मैं, सर्वशक्तिमान, निराकार, परब्रह्म हूँ। ईश्वर के इस इस स्वरूप को न समझते हुए हम मांगते हैं-धन-दौलत, मोटर, मकान, पुत्र-पुत्री, मुकदमे में जीत, शत्रु का विनाश, दैहिक प्रेम में सफलता आदि-आदि। ईश्वर कहता है-सुख-समृद्धि और ये समस्त याचना की गई वस्तुओं को देने का एक मैकेनिज्म, एक विधि समस्त मानवों के लिए मैंने निर्धारित कर दी है। मेरे अनन्त वैभव से, अपार क्षमता से, सर्वशक्तिमान से तुम भरपूर लाभ उठा सकते हो। लेकिन माध्यम वही तरीका होगा जिसे विद्वान् लोग 'कर्मफल सिद्धान्त' के रूप में निरुपित करते हैं। और इसी सिद्धान्त के अनुसार तुम्हारे अनन्त जन्मों के, अनन्त पाप-पुण्यों के कर्मों के लेखे अनुसार जो तत्व शेष रहता है उसे 'प्रारब्ध' के रूप में परिभाषित करते हैं। सौभाग्य ऐसी कुछ चीज नहीं है जिसे मैं कुछ को देता हूँ और कुछ को नहीं देता।

महाकवि तुलसीदास का यह वचन सत्य नहीं है-'रहिए ताहि विधि जेहि विधि राखे राम।' रचा तुमने है, कर्म तुमने किये हैं केवल फल का निर्धारण राम (परमात्मा) ने अपने पास सुरक्षित रखा है। और उस कर्मफल-भाग्य के सहारे मनुष्य कैसे-कैसे नाच नाचता है। इस कर्मफल सिद्धान्त का नियमन परम दयालु परमात्मा अत्यन्त कठोर प्रतीत होने वाली न्याय प्रक्रिया द्वारा करता है। मानव, तू मेरी रचना है। मैंने तुझे देह देकर सृष्टि के समस्त भौतिक सुखों का आनन्द लेने के लिए, मेरी रचना सामर्थ्य देखने के लिए तेरा निर्माण किया है पर तेरी यह देह भौतिक सुखों के उपभोग के अतिरिक्त और कुछ कर्म-सुकर्म करने के लिए भी दी है। दिए हैं तुझे कुल सौ वर्ष। भोगयोनि से पृथक करने के लिए 'बुद्धि' दी है। तू मुझे, मेरी रचना को समझ। सत, चित्त से आनन्द की ओर अग्रसर करने के लिए यह 'धी' तुझे दी है। तुझे स्वतः ज्ञान नहीं दिया, परन्तु समस्त ज्ञान-विज्ञान के भण्डार वेद तुझे उपलब्ध करा दिये हैं। तू अल्पज्ञ है, इसलिए मैं तुझे यह भी बताता हूँ कि तुझे, मुझसे क्या मांगना चाहिए। हे देहधारी मनुष्य! काम, क्रोध, लोभ, मद्, मत्सर में तू सभी अन्य जीवधारियों के सदृश्य है। इनसे युक्त कार्य-व्यवहार में अन्य जीवधारियों से मुझमें रंचमात्र भी भेद नहीं रखा। इनसे जनित कामनाओं, वासनाओं की पूर्ति भी इन जीवधारियों के समान ही तू भी करेगा-पर, तुझे दी है बुद्धि, विवेक। यही अच्छे-बुरे कर्म का निर्णय करेगी। तेरी सहायता के लिए ही तो मैं तेरे हृदय स्थल में विराजमान हूँ। बुरा काम करने के पहले चेतावनी दूंगा-भय, शंका व लज्जा तेरे मन में उत्पन्न करूँगा-अच्छा काम-सत्कार्य करने पर तेरा मन आनन्द, आल्हाद से भर दूंगा। होगा यह क्षण मात्र में ही। मान या न मान तेरी मर्जी। और इस प्रकार विवेक-अविवेक से किए गए कर्म, तेरा कर्मफल-भाग्य या दुर्भाग्य निर्धारित करेंगे और तद्नुसार ही तुझे सुख-दुःख मिलेंगे।

इसलिए तुझे बताता हूँ कि तू मुझसे क्या मांग- **1. धियो योनः प्रचोद्‌यात। 2. दुरितानि परासुव। 3. उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। 4. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्। 5. द्यौ शान्तिरन्तरिक्ष -शान्तिः पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिब्रह्म शान्तिः सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।** सम्पूर्ण वेद में अपनी तथा समस्त सृष्टि के कल्याण की कामना के अनेक मन्त्र मिल जावेंगे, वही मांग और कुछ मांगने योग्य नहीं।

– सेवानिवृत वरिष्ठ लेखाधिकारी, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर।

(पृष्ठ 5 का शेष)

की गई। कुछ लोगों पर मात्र 10 प्रतिशत ही असर हुआ। इसका कारण प्रोफेसर मार्गन ने बताया कि उनकी बीमारी अंतिम अवस्था में पहुंच चुकी थी। इस प्रयास से यह परिणाम भी प्राप्त हुआ कि नशे से मुक्ति भी 'ओ३म्' के जप से प्राप्त की जा सकती है। इसका लाभ उठाकर जीवन भर स्वस्थ रहा जा सकता है।

कैसे हुए लाभ-प्रोफेसर मार्गन कहते हैं कि विभिन्न आवृत्तियों (तरंगों) और 'ओ३म्' ध्वनि के उतार-चढ़ाव से पैदा होने वाली कंपन्न क्रिया मृत कोशिकाओं का पुनर्निर्माण हो जाता है। रक्त विकार होने ही नहीं पाता। मस्तिष्क से लेकर नाक, गला, हृदय, पेट और पैर तक तीव्र तरंगों का संचार होता है। रक्त विकार दूर होता है और स्फूर्ति बनी रहती है। अभी हाल ही में हारवर्ड विश्वविद्यालय के प्रोफेसर हारबर्ट बेन्सन ने अपने लम्बे समय के शोध कार्य के बाद 'ओ३म्' के वैज्ञानिक आधार पर प्रकाश डाला है। थोड़ी प्रार्थना और ओ३म् शब्द के उच्चारण से जानलेवा बीमारी एड्स के लक्षणों से राहत मिलती है तथा बांझपन के उपचार में दवा का काम करता है। इसके अलावा आप स्वयं 'ओ३म्' जप करके ओ३म् ध्वनि के परिणाम देख सकते हैं। इसके जप से सभी रोगों में लाभ व दुष्कर्मों के संस्कारों का शमन होता है। अतः ओ३म् की चमत्कारिक ध्वनि का उच्चारण (जाप) यदि मनुष्य अटूट श्रद्धा व पूर्ण विश्वास के साथ करे तो अपने लक्ष्य को प्राप्त कर जीवन को सार्थक कर सकता है।

–सैनी मोहल्ला, ग्राम शाबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली

> *I can accept failure,*
> *everyone fails at something.*
> *But*
> *I can't accept not trying."*

टंकारा समाचार **जून 2024**

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2024-25-26

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2024-26

Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-06 on 1/2-06-2024

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.05.2024

मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक–**अजय सहगल** द्वारा **मयंक प्रिंटर्स,** 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : **अजय**